

-

নারাজোনাধিপতির—সঙ্গীতাচার্চ্চ শ্রীরামপ্রসন্ন বন্দ্যোপাধ্যায় কর্তৃক প্রদীত।

মেদিনীপুর ও নারাকোলাবিপত্তি শ্রীমুক্ত রাজা নৱেন্দ্রলাল থান নহোদয়ের বয়, উৎসাধ ও আছুকুনো প্রভাবিত :

কলি কাতা

বৰ ৰং বাহবাগান হীট, ভাৰতগিছিত যতে,

বাক্তান এও কোম্পানি হারা

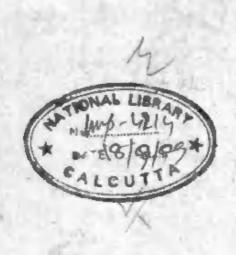
মৃত্যিত।

১০১৬, বৈশাধা।

मूना पांड है। वा

RUTE TO THE TOTAL OF

12 487.



ANT OF LAND STREET

Baja Harendra Kall Khan Bahadoor of midnapur-narajole.

WHOSE PIETY AND DEVOTION, WHOSE LOVE OF MUSIC

EXQUISITE TASTE FOR FINE ARTS

AND

THOROUGH APPRECIATION OF THEM ..

ARE

SO WIDELY KNOWN,

THIS TREATISE ON MUSIC

RESPECTFULLY DEDICATED

AS A TOKEN

OF-

GRATITUDE

BY

THE AUTHOR



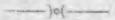
রাজা নরেন্দ্রলাল খান বাহাতুর

"ত্তিবৰ্গকলদাঃ সধ্যে দানাধীতিজপাদয়ঃ। একং সঙ্গীতবিজ্ঞানং চতুৰ্বৰ্গফলপ্ৰানম্ ॥" "ভগকোটিগুণং ধ্যানং ধ্যানকোটিগুণো লয়ঃ। লয়কোটিগুণং থানং গানাৎ পরতরং নহি॥"

"দলীতদাহিতারদানতিজঃ গাতিঃ পশুঃ পুদ্ধবিবাণহীনঃ। জীবতাদো যতু তৃণং ন খাদংস্তাগধেয়ং পর্মং পশুনাম ॥"

"The man that hath no music in himself,
Nor is (not) moved with concord of sweet sounds,...
Is fit for treasons, stratagems and spoils;
The motions of his spirit are dull as night,
And his affections dark as Erebus;
Let no such man be trusted."

Shakespeare.



বাহার, তেওরা।

ভো নরধন স্থান্তজনগণ মোলিমণি মনোনোহন,
কর সকল স্থাজন পালন হর স্থান্ত মনোভূহে ভার হৈ।
বস্থা ভরিয়া তব বশ-শশ্ধর বিধারে জ্যোভি স্থলর,
হে নর্বর নরেন্ডলাল নাম স্থপরচার হে।
পূমি সকল-ভূগে-ভঞ্জন স্থজন-রক্ষন-ধন নাশাজোলরাজকূল সম্ভ্রুল রবি বিবিধ গুণাধার হে।
ধর ভূপ-প্রবর ধর সাদর তব করে মুম্পিভি
স্পীতস্তরক্র-স্থলর মঞ্ব-মধর-মঞ্করী-উপহার হে।

প্রীরামপ্রসম দেবপর্যা।

चांचांग्री।

CE

সঞ্চারী।

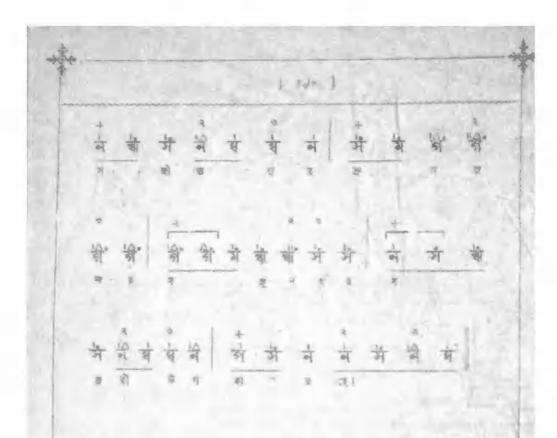
ये अ की भी भी में से की से की सी की य अ न न न न न न न न न

南田湖南湖湖湖湖南

ষাভোগ।

南南南部部部部部部南

为为为前期前期前前





लय मःदर्भाधन।

				1 3			
भूग ।	गांकि ।	可信等!	241	7811	नंदांक ।	明显是1	3.6 1
>1	5	द्रश्रृक्ष	বৃহিত	Se's	2	ব্ৰি	ৰসি *
23	6	সৃদ্ধি	স্বরিত			14	i d
< 5	35	রাগরাগিক	মাপরাগিণীয়	Ser	,	25	58
	52	ম্যামাশ্চার্থ	ম্বামাশ্যথ			fa	
3.6	२० वा	क्ष्मिक्र	বাজনস্বর্জ-	35%	9	(813)	4[9
			মাত্রক্ষ	255	4	करिइंड	क्रिक्ट
2,6-	4	আন্তি	আধার	250	7	ख्यम	ভগ্ম
				2,00	4	ভণ্ডা	अनेन् व
0%	3.5	धानभूत	ভাৰুৱা	1.86	0	প্রায়ণ	कर्मा पूर्व
49.	٩	ग्रहाँड	ন্দ্ৰীত	16	1	9 1 1	
65	9	F	기수 기기	200	ड श	स्य व	म य म न
V3 1	BE -	স্থান বিদ্যা	APP P	10.3			\$ 41
1081		94-1110	4.11	000			6.78
	141.00		- 5 - 7	-			9 7
100	3	3[म्	200			
306	8	सिदन	चित्र	356		20 10 10	च न म
3308	केट अ मह	ৰাজী, ভোড়ী,	मसकागीरकाकी			G	DF CF
2250		365	Bearing A	906	3	1	- CR
		WA.	8.5		2	1993डे	क्षीपक्रते
758	4	4	N	- 4		14 10 10	
- 262	8	स.भाव	श्चान	468	5	भ व न	7 6 7
301	0	व्यानादक	व्यम्बिक			3	E 18
		They for	to Ma for	200	0	नंदर्शत.	नामग्रह
	Es:	में म	to Ma Cu	304	0	ভাষা	要和
4. 1		का व	京 野 村	.0	-8	দিন করন্তা	হ গানকরভার
548	6	Ra Xisil i.	N+ Net t	-		XI.	
		a	2 - 3	822	9	71	19
1	TOUR		200				4
		-					

48kt	97 (B) 1	成温度 1	9# I	6511	भ१क्षित	4351	1640.1
80%	5	নিকিট্ড	ta feega	€£8	9	भृष्ट्रभी -	अकृति
850	5	*4184	14.081 4	658	5	리를루다	4.48.6
815	">	2,19	100 (10)	523	3	₹1	C41
857	2	S	S	. enq	ð	* (se)	a Copie
443	સ્	4.4%	বঙার	955	5	5.5	ş 1
865	4	ব্ৰাবত	বাজভ	817	٥	c = ====	9:(())
888	2	मं एव्श	ট্চুবু গ	1	Г	, 	
865	4	STREET	প্রস্থ	485	o न	10 八	1 v
218	Ġ	91,	ৰ1		a t		41
âte	>	महि	मोडी 💮				
19.9 C.	£	C ≢t	কু				4 X
614	3	অস্	ष्य	€40	e	CR48	्र । इस्तर
895	•	अहर्महरू	রসারণ	#51	2	~ Tel 영(학교)	 \$\(\frac{1}{2}\)\(\frac{1}\)\(\frac{1}{2}\)\(\frac{1}{2}\)\(\frac{1}{2}\)\(\frac{1}{2}\)\(\frac{1}{2}\)\(\frac{1}{2}\)\(\frac{1}\)\(\frac{1}\)\(\frac{1}\)\(\frac{1}{2}\)\(\frac{1}{2}\)\(\frac{1}{2}\)\(\frac{1}{2}\)\(\
81-0	€.	₹65	ব্রণ	155	13	व्यक्ति विद्व	বন্ধ(হ'লে
	1			665	Č.		7
623	8.5	u भ न १ ई	la Ng			<u>-</u> -	
455	0.4	71 71 71 7		i		12.	i ć.
		14		560	5	н	2)
		ৰ				1	(
€ € 9		পদ্বার ন্দি গরে		994	5	v 1 %	4 4 2
660	E C8	। विश्व र्धाः स्टब्स	[전기 (기계)			₹5	4
			্ম রেম ন				e t 8
692	5	小さる別は正	ेड क ्षा ज				F
615	8	ड ेर	गर बु	特別を	2	মহীম:	<u> শহিলা</u>

রাগরাগিণীর সময়, ঠাট ও জাতি।

র†গ্।	작위함 1 	ঠাট '	ঘাতি.	4.50
दे चत>	'দ্' চম্ভাই	কোমল আছে, ধ, ৬ই নি	अल्बुन	
ন্তেগুক্ত া	À	Š	1	
लापिका हो।	i à	কেসিল খ, ধ	3	
८घ. जिल्ला	Ey	\mathcal{Z}_{i}	d's m	
ताम(सं)	(a)	Á	8	
কবিষ্ণ ভূ।	74	3 -	3	
A. S.	0.4	्रक्षिण का स, छुद श, छशारण	3	
হৈভরগা	b	্কালক আল সাল, নি	è	
বিভাগ	i gi -	物等是指定等	चाएव	ন
আশোৰ্যী	িদ্ধানির প্রে র	্কাম্ব খা, গ, হ, নি	2,000	
दाकारी	<u>ŝ</u> .	3	<u> À</u> r	
र्थक्री ।	121	3	. 3	
দৰবাৰী তোড়ী	6	্জার ে শ্, বা, মানি, কড়িয়	查	
গুণকেনী	4	्ल ६३१ 🗣, ४, ५३ म	2	
লৌর সারক	₹.	es হ	Ġ	
<u>বেলা</u> গলী	N.	<u> </u>	.≥	
আলাহিয়া	6	न्द्र[न्का ^{र्} ड्स	ģ.	
কোক্ষ	·ē.	.24	3	
ল ে প্রভি	r-		. 3	
3639.8%	õ	Egg. (*1	· ·	
হু প্ৰহাত প্ৰশ্ন হ'ল	Ť	.6	. 4	
वेद्वयान्यास्य	36	> >	991	ধা স
इन्संबद्धां साइश्र	,25	খাভা নিষ	.4	51, 1
ভারপক্তী;	দিবা ওছ প্রেকর	कि। यह श्री हुई कि	75 majo	

378.1	1,27 (7.5	wite.	time o
8/9/1094	ē.	į,	ù	
21/4/3/1	2	\$ 1° "', \$ 2° "a"	?	
2-10	ावका हा ^ल लाहत	Jan 2 6, 8, 8, 8, 36 9.	è,	
न्त्र्र ⁴ त्र	ā.	करल्च हरूर	W150	4
ET: 141	ð		3	*1
B1.5	٥	e,	è	et.
1000	4)	jatsa uj afa s	16154	4
कुरार्च	ng.	्कारत का, करीं द	a.	I _C
21 F 🚉	2.	ates	1.67	9, 8
7,500	ð	कारण के अर्थ है है	2 may of	
China.	ē.	CREATE BY BRID	1	
grange (not)	ű.	(315F B) F	1	
105x		L		
4. 美	κ.	1917 1 4, 5, 515 X	ž	j.
明 111名			j.	!
्रभूतिकाकात्रास्	7		16	
Mark Comment		(C)	->	!
13.7		9:	- 2	
W. 11.			'n	
100		1888 W. M. W. L	- 11	
李西門-	PATTE OF MEETING	443.2		
782		A	a	
the exte	n	18.5		
stelle.	λ.		3	
10-61			. 6	

त्र्र्ग ।	产品20%	\$13	Rtf v	1 22 1
319 ·	8,	ò	3.	'
WIT.	0	7	2	
नहेमाब्द्य नै	9	च वर्ग क	2	
¥13	ą	÷.	3	
४ ७१२५ ।	, irs	A	3-	
कार्यात् ।	9	18 W	<u>.2</u> .	
₹100 mm (12)	Eg .	8	-45	
বিশংগ্র .	Ä	ð	4	:
****	1	क्षा भग ।	96:	12, 12
वरवादी सामक्	j.	\$1201 - W. W.	> 4.6	
÷ 'ष्टक्रे ु	र्श व २४ साहर	LACKER, PERMA	12	
अस्कृतिः	-3	À	7	:
机划点	Ģi.	್ರಹಾರ್ಷ ಆೃಗಧ	S.	
Mir in	39	30	2	
124	A	-	r,	
जिल्लाक्।	4	্লালেশ শ, ৪৩ জি	Ġ.	
Committee	ē		25	
क 'इ " त	*	À	3	
TREET AND	7	è		
and the		ý	8	
(Mess)	ā.	50 m. 50 a		
क्षत अध्यक्ष	Ġ.	ķ	2	
2.31	ħ	ž,	1	
CAR RAD	.0		4196	
प ्रहे	7.	設ま たと		

# \$ #\$ 1	Bin 5 (\$13.1	. ₹15:	निक्षित्र।
্গী ভূময়ার	ė	is in	4.	
क्षेत्रकाशास	À	3,	याद्य	rt
5,50,1	à	ě	14 d	
ভিলক ক'লেন্	ÿ	7	3	
MLS (12)	7	<u>.</u>	j	
খাহার	5	*	#T	
(वं (कार्ती	27	Ą	3	
주지 -	2/	219168	å	
光器[4	8	ñ	¢	
CP4	8		백수송	
48% ·	3	्ट्रांगत के, हो प्र	- 3	1,
भाराकोन	3	TANK A MAG	454	ν,
य किंद्र	r.	_455 F M	spreed.	4.
特益研	i	्कामत ६, ५, कडि २	rêr	
148Î	i,	Charlet Live	(-	
阿爾利	-	4 2 %	2.	
再業275%。	7.	विशेष्टर एक	jî.	
figure	c. 4 \$5 @6 c	25 2	845	, 4, 4
रिस्थ्रज्	t'	ରୁଷ ଲେ	ी क्षांकृत	- 15
(* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	.9	5¥ #		
A Chill	ংকি ভৰ্ম প্ৰায়ণ	TRILLE &	215	07
্ণিড বিশ্ব	3	(本)\$2次 电,图 BE \$1	F131	n



4

সূচীপত্র।

विनद		યુકી:	, (विक्रम				भूमें।
医水品及[自2]		4	ক্ৰিবেশ				co
स्कोत मन्द्रमा		54	非别知识				69
লপাত্র ·	1	56	atenta.				28
神()		55	শ্রীভাগ -		.,		-55
기생속		Sa	(相等	প্ৰা কিন্তা	£क का [©] 5	13	
ুড়িন; ও আম		50	Ni afar				ķε
कांद्र व ्कासव		4.5	অন্তর্গর ।		h -		50
चुरुक, 'सहैकादी ६ मी	φ ·	₹.	্ধেন্ট);	4			કર
वाकी उर्विकाली		₹₹.	কালারী খেন	(Ši			0.5
গ্রহণ ও লগতের		2.5	e (spg)				34
রাপের প্রকারে ও জাইট		4.8	काक्(इंस्हे)	b 1			95
দ্ৰালাভ ছবিশার বি	yith or	2.5	. ((वसम्पर्भ)	# 15)		
खश्रम, दशहर म ७ हेश स	2 mgs	2.6	स्कार्ड -	1.			40
2,64		÷ ¢	काङ्गठिहे हा				450
ক্ষাপ্ত ভাগে 🔐		২৬	গুখ ওরা				2.5
गम्लर्भ, व विश्वनाभी,		2 m	7.16				
			Atmoster.				4,00
再發	1		্যুক্ত কৈন্ত্ৰাল			•	4 13
্ল্যন্ত ক্রিক	66 20 A 1 3						Si
_			भक्षण <u>क्र</u>				40
							05
ানটোটেড ালা ↔		42	6851				V.S
3 1		-0.6	- 4		4.6	1.	\$6
CEMPT .		50					

- - -

wife .

4							
			, 5.	0.5			
				1 •			
	Sans		न्यूरं।	বিষয়			· 기송1
	THE REPORT OF THE PARTY OF		<2	रेक्टर्ड	gh		0 S
	्रक्षे दस्ति।		1.6	सहित्योग् स ् रक्ष	- "		6.51
	· 经对价的基本 的复数等		6.5	1 1 K			60
	- 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		8.2	अक्टकोन			75
	on 1,613.			310-1-122			0.5
				,5 ×4			54
	स्राप्तिकार्यः च्याः ।		1.8	Jan 7 1 m			0
	र र र वर्ष क्ष सुरु र		4 1	12 K.F			4
	d alici			, 2. 142			
	2. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1.			W.C.			4 4
	achd .			81912			10
	ক্ষেত্ৰ কাৰ্য্যটো			110011			14
	er tar e		Ay 1				
	13 150		1.		30 p		
	5-15			Mary Mary 1	a tipe		811
	fria attition .		2.1	1.17	17		>B .
	1, 5, 0	,	Cu				H × 5
	- Sin			+		-	Ŋп.
	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		→ ·	2.00		-	ξ., .
	STORY.		5.5	with the			.54
	才在 看		P (-	margarite to - 1/2	T 11		.25
	र्वश्चार		4.2	j. H1	gr -	4 *	2:00
	र्वायको महस्त्र शेलपुरस		44		(1.138)		t .
	returned and the second		1.5	Care - State			937
	चेप्पटले .		*				<3
	X-12"		44				1 21 %

世間で

4

SHOT

Signer.

The second secon

विवर		Ųĝ!	বিষর		পুষ্ঠা
。 - 我們們有 -		3.06	ু সুরফাকা 👵	**	351
n (-688)		25.			COB
ইয়ম কলাশি—(১)গাল		250	a signs		4.50
р		२९४	्वत्वत् – भाषाद		201
3776433	pr'	965	★ · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	٠.	₽ 9
सरका		3 € ©	ৰাৰাজ(গ্ৰাহাল	•	445
		326	. 1		004
ু বীপেছাল		261-	ू दिश्लकृतिक ···		05%
দু । দুলোক		0.60	夏季 斯特/		€03
		. 65	24 miles - 194 deg.		250
· (E 4.3)		164	। । ।	111	315
ू आंद्र-दृष्ठीय	ger a	3.69	গাঁৱা		७११
2000年		345	क्ष्मित्रैप्रीमक्ष्म		18.5
কলাণটোডাল		3.24	्रांस्क्रमहोरशमात्रः —		593
कार्याम्		5:3	्रामीक् इंटी संस		090
gastr .		03.2	Careaten -Cereta		540
		951	্র ইত্রিক ক		286
্ কাহাচীৰাগ		222	ু লিপ্তাৰ		749
ক্রাফিরভাড়ী লেগামার 👵		>>8	গৌরী—টোল		818
কাজিলিখ্জীপতাল -		425	क्षण्या—हर्देशक		⊅ 0.5
表出,是1-4-19月4年4 · · · ·		30%	করেন্দটি-প্রেটিকাল -		org
শামার 🕠		200	ু ধানাত ··	1.4	8.72
* #3544 ···		520	, WESTER		-000
Capite;—Oitsid		525	ভারতারী -(চীকার		তাৰ
		1,89	, পামার		350
10 s= -1		276	करत्त्री-होशन .		701

- ming				. 4
Ĭ				
1	विस् य		भूको <u>''</u> तसद	361
	হয়েং –ইপেশ্ব		২৯৭ নট	2.76
	िंडकुक्ष कार्याम —हर्देशन		এং০ নটম্ভার - চেইলাল \cdots 🕟	0.55
	,		\$ \$	945
	*		বছর বার্থী—ধ্রের	208
!	, (219a)		হৈছে ।	854
	मक्ष्यार्थः, सहयक्षा-(5 ^{रेकर} म		Brit FAMILET .	6239
	* *		医中毒 经营工一个管理人	. 2.8
	V P		550 ST \$5 -0.7115	53 e
	e. L ^e		å 5 · · ·	835
	e b		80.9 . 공연화(학) · · ·	605
	ু ডিমাতেগাতা		830 " Sibara	200
	o MINTS		6-6	A.C.
			第14 () () () () () () () () () (40%
	न वेशन स्था		828 2 (558)	409
	e Caretti		६०५ - धुरत — दहाराम	. 47
	सन्दर्भ (अर्ड) — (श्रीधार		Section 1	\$8.0
			5581 . 81270	223
	11年で		556	1906
	sample of the sa		55.5	326
			3\$81 (17) (17) (17) (17) (17) (17) (17) (17	5 5 .
	(南京のななーを作者をなる)	1	585 (\$\$) -P*\$(\$	54.8
	$\langle \beta \Phi \xi \delta \delta \gamma' - \zeta' \gamma' \delta \gamma \beta$		১৪০ - পুলিয়া ধান্তী - ুণী হাল	2.13
	(ME(18 98)	* 1	267 '- " KELS	279
	् अक्षमभ्यत्ते ।	174	२४१ (४ ६—८ १)श्रम	863
	श्रामञ्चाल-द्वी शतः 👵		२०३ . वंदलहास	820
	. ধ*মাৰ			11.0

ि्वज		भूई:	বিষয়		পূর্মা
বাগনী —চৌধান …		০১৬	25 程·阿拉丁		565
৮ ধ্যোর …		800	. · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	- 1 -	268
शहाद(होडाम		689	্ গ্ৰহণ		295
		24B	. (7.93°···		195
. , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,		965	p - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1	-	290
Bering!		849	कुनानीदर्भकाग		26%
ু ইংশ্চোল	e + 8	800	。 表 3年(表) · · ·		を有め
25 P		868	u Maig ···	4	2.54
20 美國情報 · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		869	ভৈন্তৰ—ভোষ্ঠাল 👵		9-0
p	***	865			33
, (3.5°)		869	415T3 · · · ·		bp
বিভাগ—ধাষ্ট্র	***	25	. কৃপিছোল		F>
্জীত্ত		200	् स्थान		66
বিংল্পা— কুরুসাঞ্চা -		939	, পাড়গুলাভাল		av
জু আজানো ব	14	455	टेंक्स्वी८१४०		208
ব্ৰাচনী সার্থ—চেইডার	1	366	, বাঁপভাল 👵		300
· Project	?; ···	563	পুৰকা ক : ··	F 1	206
, (উপরা		380	मध्यास मादल - उत्तरे ताता.		252
বেলাকলী—ধাষ্ট্র · ·		588	্ৰ ধ্যম্ভ		284
ৰেহাগ~~চৌভাব ⋯		369	वहार तर्राज्यम		685
,, উগ্পান্ত্যল 🚥	***	612	सार्द्रांश्र⊹		248
, 41%19 ···	***	650	খালবী—চিমাতেভালা	1 - 1	225
79 yı vak		432	ম্বারাজী—ছঃখ্যুক্তা 👑	.,.	२००
E 57	4.4	659	মালকোলচৌভাল		895
# 1 (5.68) ···		252	ं धामात्र …		B 4 B
ভীমপণ্ডীচৌভাল		240	• ८७६३। · ·	414	816

A			interior de la companya de la compa	
विस्त		পূর্মা	বিকয়	2/81
, ইংগভাৰ		8 96	स्वत्यवाश्य,	· 244
বিভাষ্টার—চোঙার		955	র্ণিত্বি ·	209
कुलकार्यो		396	গোহনী— "	488
(यस-क्रांलशाम		086	क्षेप्रेट-एवे सम	899
্মশ্বীমাল চু	1+1	028	el e	540
ংশংক্ষিত্র—শ্বামার		3-6	\$1753 ···	545
दायदक्षीसंग्लहानः		48		₹₽#B
রাজ্বিভর কেন্দ্রা \cdots		59.5	कुरमंद्रिः ।	45%
শ্ৰিতকৌতাল		603		269
#\$:1839 <u></u>		655	4	220
द्येत्राध ,		854		850
2 4		550	গ্রামার \cdots 😁	89-5
a aistein	4.1	120	\$140KB	85 6
भृदक्की—सर्ग्य <u>ः</u>		508		
भिन्द्रा-		clea	অ'লাগ	
F 10		59 5 ·	ত্রম ক্রাপ্র ০০ ০০	409
শৈশ্ব—ভৌত্তে	- 1	366	950- ··· · · · · · · · · · · · · · · · · ·	4.00
নীপ্রাল		1	युर्गाद्वीष्-	494
হুটে—চেলেন		080	পেয়†ল	
de felivier		085		
POR SPECAL		⇔s⊬ .	व्यक्षातः कावशको	を介用
ल सम्बादा ।।।	111	080	。 (福利), 4 …	944
P P P P P P P P P P P P P P P P P P P		068	টস্নম্ৰামান ⋯ ⋯	440
a grante		386	Section 1	464
et 12		SCP	" stillight	6.65
# पासात		060 p	ইমনভবাগিএকডালা	453
হৰট ননাৰটোকাল		080	ু ক্রিয়ালী	460

			-			
বিষয়		पूर्व।	िक वृक्ष			9
. ((3.50, 50) n		832	ভূপকলা	শ (রভুদ্ধস) বাওমার্ল	1	287
ক(মোপএকডারা	.,	498	হৈত্ৰৰ—	অভাঠেকা 👵		€2€
. व्यक्ति - प्रत्याम - + -		465	V;₩(§	(18)	1.0	422
क कारणको …		€80	ভাষ্টেশ্ল	्या श्राहास		619
中军(每一(5克·乌)。		696	क दिल्ला —	অভ্নত হৈছে	4	455
লোকসভ্সক,ওয়ালী		95.5	明年第1-17	মাংক্তিক: 👵		302
ছায়ানট —, ৪৩ট - 🕡		4.45	\$17 - a	(神文学) 100		629
क्ष कर हो — काखुग्रीका		355	্. জ	गंड्राइंड्रेक्ट 👵		495
দরবারী কলেড়া – একডালা		640	ইনেধ্বণ—	erissis		558
वतराती उठाकोका दवाली	.,.	412	거짓짜~!~			575
মট্রমার — এক ভারা		£ 5 %	P	অভিনেত্ৰক		-53
কাওগুলো	- 1	825 j	ন্ধেন্-			600
p. Cy	4	0 A15	246—	4.		665
, (তেইপেন) ,	* 4 *	285		अक्षात्रं 🚥		653
পুৰবীআভাঠেকা		32,3	4	4.		¢b-c
The state of the s		603	41	कार्यकारी		6 trie
भूबिहा - आकृतिहरू · · ·		600		At 1 s		e 20
বস্ত		530	হাষীয়	अ(क् र ्ट्रेक्:		465
न(क्री कें) → 🐰 👵		255				
नाहांच- ,		400		টপ্রা।		
, (ভেগেনা) কা আলী		\$80 .	4/fig	्रहार्विक संदर्भ		562
*481×	-14	628	*5	D N= 10		695
(g:::::		9C0	श्राप्तांक-	कुर ् के	1 1-4	660
জীমণক জীস্পাড়াটোক।		956	176	यहंडहरली	-11	के इंट
কুণালী—কাভৱালী 🕠		499	বিশ্বেষ্ট ত	त्रहाना-ज्याचारकः	144	965
্ব (ভেরেলা) ু		404		গাংকি—মধ্যমান		665

1 25 1

		and a second of the second of	C
	9≱:	िरश्रद	受慰 :
7.0	51#	719951	f _{1.5} te
1 6	469	श्राप्तव्य नुस्तरे	14.3
	6.45	গংলারী কান্দ্র –জাড়াট্রকা ন	469
- 1 1	642	महर्दारी (७१%) 🔒 😶	¶ no
-	512 6	ন্ত্ৰীৰ বৃহন্ধী — জা প্ৰাৰ্থী	6-5
	911	वर्गकार-	24.5
	99.6	्रहर्मका - का कृतिहरू ।	500
	6.8%	· 司司李章 — 李子李章	a C 8
	512	great through the	2 × 1
	599	1 F F Cart	91.8
		titizercerti	^{-
	200	ললেখন লাড়া এক: ১৮	3.2
		- 548 - 552 - 542 - 552 - 552 - 554 - 557 - 549	তিত প্ৰিছি নুংলী তিত প্ৰিছি নুংলী তিত নিৰ্দিশ কৰিছে — জাড়াট্ৰা নি তিত নিৰ্দিশ কৰিছে — জাড়াট্ৰা তিত নিৰ্দিশ — জাড়াট্ৰা তিত নিৰ্



প্রস্তাবন

সঙ্গীত অতি প্রাচীন শাস্ত্র। বেদই তাহার প্রমাণ। গান যাত্র। পুরাণেও বহুস্থলে সঙ্গীতশান্তের প্রদন্ধ দৃষ্ট ইইয়া থাকে। অতি প্রাচীনকালেই রাগরাগিণী প্রভৃতির স্বষ্টি ও সঙ্গীতের পুষ্টি হইয়াছিল। প্রাচীন সঙ্গাতের দহিত বর্তমান সঙ্গাড়ের অনেক বিষয়ে পার্থকা পরিলকিত হয়। কুরুকেত্র সমরান্তে ভারত অবসাদ নিদ্রায় অভিস্তুত হইয়া পয়ে, ভারতের স্বর্থবিধ শক্তিই জড়তাএত হয়, সকল প্রকার উন্নতির মোতাই লক্ষ্যাত প্রাপ্ত হয়, সানেকেই এইর্গ খড়মান কমান। অনুমানটি অবৌজিক নয়। অভাগে বিদ্যাত্তর্জার ভাষে সঙ্গী র ডার্ডায়েও এই অবসাদ্ধ্যের হীমানী হইয়াভিল। মুম্জ্যান শ্সেনকারে সঙ্গীতেজ্জার পুনরভূরখান হয় : দিরীভার আক্ররের গৌরবোক্ত্র রাজ্য সহীতিশাত্ত্রের পুন্রভাগত্য অধিকত্তর পোরণাথিত: স্থাতিশুক ভাষ্টেন প্রভূতি স্থান্তর প্রভূতিক ल्यामान करलम: हेक्पलाहे मना महीराउन लावाईक । हेक्सरावन तर्व छ গীতগুলি ভাব, ভাষা এবং হর মকল বিষয়েই উচ্চ। সেক্ষাল मधीत-भोधारतत उक्कन यम्मा तक्षा । अ तहक्षि विक्रित কৰবিত হইলে স্পতিশাস্ত্ৰ নিতান্ত দ্বিত হইয়া পড়িৱে এবং স্পতি-বিলানেক্ত্রী জনগণ ইতাদের অনুভ্রসাহাদনে বঞ্চিত হইনে। ভ্রুত গীতগুলি প্রদক্ষে পরিবক্ষণীয়। সেই জন্ম আমি বহু পরিভায়ে। এই সকল গীত অৱলিপি সহ লিপিগন্ধ ক্রিয়া সাধারণে প্রচারিত করিলাম : প্রার্থীন গীত্রকালকে রক্ষা করাই এই গ্রান্থে বুখা উদ্দেশ্য হটালও ইহাতে রচনা ও ভাব পারিপান্টোর অনুদ্রাবে আধ্নিত ভুই চারিটি গীতত সন্মিরেশিত হইয়াছে। একং গুণ এছোঁ ত্রিল্ল হলি

এই প্রছের রসাত্মাদন করিয়া তৃপ্তিলাভ করেন, তাতা হ'ইলে এন সফল জ্ঞান করিব।

হিন্দি গীত হিন্দিভাষায় অনভিজ্ঞ গায়কগণের মুখে অনেক স্বনে বিকৃত হুইয়া পড়ে। গায়কগণ কেবল স্তুরোখিত ধ্বনিরই অতুকরণ করিয়া যান, রচনার দিকে তত লক্ষ্য রাখেন না। খাঁহারা সঙ্গীত-বিদ্যা শিক্ষা করিতে ইচ্ছা করেন, হিন্দী শিক্ষা তাঁহাদের নিতান্ত আবশ্যক। গানগুলিকে ব্যাখ্যাসহ প্রকাশিত করিতে হইলে পুস্তক বাস্থলা হইরা পড়ে, স্কুতনাং এই প্রথম উদ্যুখে তদ্বিধয়ে ক্ষান্ত রহিলাম। পরিশিতে তুরুহ শব্দের অর্থ দল্লিবেশিত করিলাম। এতং সমিবিষ্ট অধিকাংশ গীতই আমি মদীয় পূজাপাদ পিতৃদেব व्यवस्थान वर्म्माशाधाध महागदात विकरे गिथिशाहिलार । नया দলীতের গোরবের সময়ে দিল্লী যেরূপ দলীত শিক্ষার কেন্দ্রস্থল হইরাছিল, বাঙ্গালার বিঝুপুরও দঙ্গীত চর্চারজভা দেইরুং প্রাদিদ্ধি বাভ করিয়াছিল। গত শতবর্ষের মধ্যেও বিফুপুরে রামশক্ষ প্রভৃতির অণয় সঞ্জীতধরজয় ব্যক্তিগণ বিদামান চিলেন। মদীয় পিত্রের, দলীভণ্ডর রানশঙ্করের প্রিয় শিদ্য ছিলেন। ইহার সহিতই বিষ্ণুপুরে সর্গাতের গৌরব একর? নির্বাণোশুথ হইরাছে। বিজ্বপুরে একণে যাহার সঙ্গীতশান্তে সম্রাধিক অধিকারের গৌরব করেন, তাঁহারা নকলেই প্রায় ইহারই শিষ্য । এই প্রাচীন গীতগুলি তিনি অভিষয়ে সংগ্রহ করিয়া রাখিয়াড়িলেন এবং এই সকল গানকে বিষ্ণৃতির আস হইতে রক্ষা করাও তাঁহাত হদরের চিরন্তন অভিলায ছিল। স্থাত তাঁহার অভিনাধ পুরণের স্বোগ হইয়াছে। এই গীতভালর স্তিত ম্লীণ স্বর্গীয় িত্রণেপ্র নাম বান চিল্মানীয়া হয়, তালা কউলৈ পরিশায়ে। প্রাচুর পুরস্কার কটালাড় জলম ক্রিব।

মধীবিরেমিণি, সঙ্গীতক, শুভুকীর্তি রাজা শ্রীমরেশ্রলাল বাঁম মহোদারের প্রভুত উৎসাহে এবং অর্থানুক্লো এই সঙ্গীতগ্রন্থ সুন্তান্ধিত ও প্রচারিত হইল। রাজা মতোলারের সাহান্য ব্যতীত এই সঙ্গীতগ্রন্থ ক্ষমান্ত বিলীম হইত না এবং দরিক্রের এই উচ্চ আশা হাদরে উঠিয়া হাদরেই বিলীম হইত। এই প্রস্থামি তাঁহার দানশীলতা এবং গুণগ্রাহিত। উভুরেরই উজ্জ্ব নিদর্শন। এই গ্রন্থ প্রচারে রাজা মহোদ্য রাজোচিত গুণেরই পরিচয় দিয়াছেন এবং সঙ্গীত ও নাহিত্য জগতে একটি অক্স উজ্জ্ব কীর্তিক্তর্ভ স্থাপিত করিলেন। তাঁহার দিকট আমি চিরকৃত্ত্বতা-পাশে বদ্ধ রহিলাম।

এন্থলে আমি, স্থাবির মহারাজ শ্রীযুক্ত ঘতীক্রমোহন ঠাকুর ও তদক্ত দঙ্গীতমার্যজ্ঞ রাজা শুর দোরীক্রমোহন ঠাকুর মহাশার রয়কে ধল্মবাদ না দিয়া থাকিতে পারিলাম না, কারণ ইইারাই এরপভাবে দঙ্গীত শাস্ত্র প্রচারের প্রথম পথ প্রদর্শক। ইইারোই এরপভাবে আমুক্লো দঙ্গাতশাস্ত্রবিশারদ ফর্গীয় ক্ষেত্রনোহন গোড়াফা মহাশ্র শ্রমকগুলি সঙ্গাত-প্রস্থ প্রথম করিয়া সঙ্গীত-শিক্ষার পথ স্থাম করিয়াকেন।

অধিকন্ত সরলিপি প্রণয়ণ স্থান্ধ আমার স্কোদর স্কীত-কলাবিং ধীমান্ শ্রীমান্ গোপেশ্বর বনেনাপাধ্যায় বহু পরিপ্রাম্ ধার্থন্ত সহায়তা করিয়াছেন। আমি তাঁহাকে অন্তারর সৃহিত্ আশিক্ষাদ করিতেছি, যেন প্রিয়ত্ম গোপেশ্বর কাঁরে প্রতিভাগেণ্য নুধ্যম্যাতে স্থানভাজন এবং সংসারে তথ শান্তি সমুদ্ধির আধকারী কাইতে পারেন।

পরিশেদে, রুভজ্জতার সহিত্ত স্থাকার কবিলেছি তে, বিজ্ঞপুর

্ৰক্ষী থ-সন্ধরী ।

রাজবংশসভূত ইন্ধান্ নির্দী আমার প্রিয় বহু বিবিধবিদ্যাবিশারদ শীধুক্ত বাবু বলীক্তনাথ সিংহদের মহাশ্যে এই পুক্তক সংশোধন পকে বিশের পরিপ্রান শীকার পূর্বক আমাকে পরম উপকৃত করিয়া-ছেন! কালমনোগাকো ঈশাবের নিকট প্রাপনা, বিনি সেন প্রস্তুত্বতে আজীবন পরহিত প্রতে প্রতী থাকিব। সক্ষয় কার্তিশাভ করিতে থাকেন!

डेशक्रमणिका।

সন্ধীত প্রকৃতির ক্ডাব। প্রকৃতি সন্ধীতান্টা। সিকৃত ভিতৰ আরাতে, করের্বালমীর কলবতে নেত্রের গড়ীর নিমানে, নির্ধারিশীর মার নাৰ নামে, পশুসালের টাহফগের, বিচলকুমের কর্মাধরে, মধুপ ক্জারে, প্রন স্থারে, শাঃ প্রকারে সত্ত প্রার্তিক বার্তির সঙ্গীতের ধ্বনি উঠিতেছে। ধ্বনি অনন্ত। ধ্বনি সনুষ্যক্ষদয়ে বিবিধ ভাবের বিকাশ করে। মনুধাকঠেও বছবিধ ধ্বনি উত্থিত হইতে পারে। জীব জগতে ধ্বনি, ভাব প্রকাশ্যে ঘার-স্বরূপ। ইর্মের জনি এক্রপ, বিষাদের ধ্বনি অক্তরপ, এইরূপ বিভিন্ন ভাবে কণ্ঠ-খরের পরিবর্ত্তন হয়! আনন্দের উচ্চ রোল, বিধানের করুণ বিলাপ, ভয়ার্তের কাতর প্রার্থনা, প্রেমিকের প্রণয় সম্ভাষ, ভক্তের প্রাণের উচ্ছাস প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন ভাব, ভিন্নরপ ধ্রমিকে আশ্রয় করে। ধ্বনি নিহিডা ভাবোদ্যাবিনী শক্তির স্ফার্ডি সাণনাই সঙ্গীত-শাস্ত্রের তিশেশ্রা। শিস্পনিক্রণ ক্রিমানি সম্ভের গুড় রহস্যে এবং গারিট সন্ধার শালের লক্ষ্য এবং আবোচা। অনিয়নিত সংগে জরের क्षांसांश कोगाल छार्याकीशन या फिल्लिसमान इर म : २४ শ্রুতিরখের বা ভারত্রিশের বাদাত হয়। দেই করা স্ফীন্তার অন্ত প্রনির প্রটিকতা ভেল করিয়া বিভিন্ন স্থানের উৎপতি ও সম্বধ নিউল্লেখ্য কাল্যাট্ছে: স্বল্যাজ্য প্রতেশ পথ সূপ্য ক্রিটেড ত'হার ওও হার মুখ্য উল্লেটির কলেছে; পদের ব্যক্তান স্থিতিবশ, ভাগে বিকাশ এনং সভা নিৰ্মাণনের উপায়ালী কবিয়া ভিত্ত ভিন্ন রাগ বাগিণীর সৃষ্টি করিয়াছে। স্থান্ত শাক্ত,--বিজ্ঞান শাক্ত ইচা 'ষ্য-বিজ্ঞান' নামে অভিহিত। জড়ফ শক্তিনে বৃদ্ধি কৌশংল

নির্মান্ত করিলা মানত কর প্রায়োজন অনায়ামে পুণ করিতেতে।
ত্বলোকাকে প্রায়োজন প্রায়োজন করিয়া মানব
চিত্ত বিনোদনের এক জ্বনর উপায় উদ্ভাবন করিয়াছে। আর্মান
জাতির সর্বতাম্থী প্রতিভা অবরাজ্যেও জ্বনর প্রাক্ষা
ছিল। বে মহীয়দী প্রতিভা আনরাজ্যে জিখোজ্বল প্রভায় জীড়া
করিয়া জগৎকে চমৎকুর করিয়াছে, সেই প্রতিভাই স্বরাজ্যেও
জ্ঞাতির নিকট খণী; সঙ্গীত বিষ্য়েও আর্মাজাতিই আদিশুরু ।

ক্রম্ব্যামূভতি আর্ঘ্য জীবনের প্রধান উপাদান। আর্যান্তাতি সৌলর্য্যের উপাসক। জ্ঞানরাজ্যে এবং ঐর্যারাজ্যে আর্যাজাতির সুক্ষানৃষ্টি সমভাবে পৃষ্টিলাভ করিয়াছে: স্বভাবে যেগানে সৌল-র্যোর বিকাশ, আর্যাজাতির দৃষ্টি সেইখানেই আরুষ্ট : আর্যাজাড়ি প্রভৃতিপটে দৌন্দর্যোর দূত ধরিয়া প্রভৃতিত স্থলর দেবতাকে জ্ঞাত হইরাছিলেন এবং বভাবের প্রেরণায় প্রাণের আবেগ সমীতের শংষত বহে ব্যক্ত করিয়া প্রণে দেবতার মারাধনা করিয়াছিলেন। আরাধনার ইহাই দরদ, সহজ, স্বাভাবিত প্রশন্ত পথ। ইহাতে শ্রম चाह्न, किन्छ दिन्य नार्टे ; देशाएँ कार्कात्रका नार्टे, यधवर चाह्न : ইহা এক বদানন্দে বিপ্রসাথী ইন্দ্রির সমূহকে মোহিত সৃষ্টিত ও যক্ষ্যুত করিয়া চিত্তচাপলা নাশ করে। ইহাতে জ্রীতিন প্রবাহ ব্দতঃই অন্তরাভিযুখে অনিচেন্ন গড়িতে ধাবিত হয়। ু দেইজ্ঞ হতাকোৰে আভ্ৰাৰ স্থান্তৰ সাধ্যা-- কিব্লাক-প্ৰিড মহনি ন্তুন ত্রিভর্ত্র। তানে কণ্ঠ বিশাইয়া হরিনাম গানে সভত বিভার ;--মহা প্রারণ সম্পান আন্ত্র কালিকা যাক্তানে স্পর্কার সেন্ত্র উল্পাসনা ক'ল্ডেন । তৃৎপ্রতির জড়ই নাম দানে, তৃৎপ্রতিপ রক্টি সঞ্চীত

শাস্ত্রের উৎপত্তি। প্রাচীন খানিগণের কথা ছাড়িয়া নিলেও, এ কালেও সাধক-হাদরে দঙ্গীত অল্ল প্রভাব বিস্তার করে নাই। জননেব, বিন্যাপতি, চণ্ডীদান, গোকিন্দদাস, জানদান, জুলদীদাস, অরদান, কৈছুনাথ, রামপ্রসাদ, কমলাকাত প্রভৃতি সাধকগণ প্রাণের উচ্ছ্বাস, সঙ্গীতে গাঁথিয়া দেবতার উদ্দেশে উপহার দিয়াছেন। আবার বেদিন চৈতভাদের জানের কঠি- শৃঙ্খল ভয় করিয়া প্রেমের প্লাবনে ভারত ভাসাইরাছিলেন, দোদমও তিনি সঙ্গীতের প্রাণোম্যাদিনী শক্তির নহায়তা লইয়া শত সহত প্রাণে বর্মভাব জাগাইয়া ভূলিয়া-ছিলেন। সঙ্গীত ধুমুগুর পক্ষে যুক্তির সোপান। "গানাৎ পরতরং নহি" এই মহাবাক্য সঙ্গীতের প্রেষ্ঠছ বিঘোষিত করিতেছে।

দঙ্গীত ধর্মভাবের, এমন কি সকল ভাবের সহিত্য জীড়া করে।
দঙ্গীত বহুতজ্ঞী হৃদ্য-বজ্ঞের সকল ভারকেই স্পর্শ করে এবং সকল
ভার হইতে সঙ্গীতের স্বর জিখিত হয়। সঙ্গীত, ভাব-সমৃত্যের
প্রবন হিলোল; ইহা কখনত বা মৃত্র নিঃখাদে মানব হৃদ্যে
অগৃত লহরী-লীলা প্রকাশ করে, কখনত বা মহাবলে মানবহুদারের
আমূল আন্দোলিত করে। প্রেমের আবেগ, প্রণয়ের আবেশ,
লেহের সোহাগ, সঙ্গীতেই স্থলর ফুটে—বিরহের হা হুভাশ, শোলের
সার্থাচ্চাস, নিরাশার দীর্ঘ নিংখাস, সঙ্গীতেই সুলর পরিজ্ঞা
হা। যে দাব বাক্র প্রকাশ পাইবার নতে—ান দাব নগনের
ভাবেত বাক্র হয় মা, সঙ্গীতে তাহার নিরাশ হয়। স্ক্রীত কথনত
কাদার, তথনত সালার, কথনত বা স্বান করে—দথীত কথনত
উত্তিতি, কথনত স্থান্তি, কথনত বা স্বান্ত করে। প্রবানে যে
সাদ নাই, মধুতে যে মিন্দান মাই, স্বান্ত বা দেকে। মাই, স্ক্রীতে
ভাহা আছে। স্ক্রীত ব্রুমে অনুত উদ্যান হ্নাল দীনকাৰ আন্ত

নারদে রাহ সকলে করে: নার্মান কটিন কাশাকে কোনাল করে, উত্র প্রক্রিকেন্দ্র করে এবং টার নের্নেক মনুর করে। সপ্রন্ধ করে। তিমিরাচছরকারে তিনির জ্যোৎস্বাভানি নাকশি করে, শোকদার প্রোণে সান্ত্রার শান্তিবারি সেচন করে, অবাস রুড্ছানরে উৎসাহের তরল ভাড়িত প্রোভ ঢালিয়া দেয়। যে কাল্য শভ সিদ্ধুর গভীর গর্জনে, শত-বল্লের একত নির্বোধে কম্পিত হর না, সঙ্গীতের নধুরস্বরে ভাহা অভিভূত হয়। যে কাল্য নিরন্তর স্টোর কর্মে পাধাণ স্মা কঠিন হইয়াছে, সঞ্চীত ভাহাকে বিগলিত করিয়া তালীয় বিশুক্রপ্রায় চিন্ত-রৃত্তিগুলিকে অফুরিত করে, যে কাল্য দক্ষমকুভূমি সদৃশ একান্ত নীরস, সঞ্চীত ভাহাতে জীবনলারিনী প্রোত্তিরনীর সঞ্চার করে। সঞ্চীত ভার-জগতের সঞ্জীবনী শন্তি।

সদীত অবসর বিনোদনের স্থানর উপায়। কঠোর জীবনা দংগ্রামে পরিজ্ঞান্ত, অবসমপ্রাণে অমৃত প্রবাহ চালিয়া দিলা সদীত নৃত্য শক্তির ন্যার করে। এরপ নির্দোশ প্রীতিপ্রদ আন্যাদ আর দ্বিতীয় নাই। ইহাতে দেহমনের অবসাদ দ্রীভেত হয়, মনঃ প্রাণ প্রফুল হর এব ক্ষামে প্রুমার ব্রতিগুলি ব্যন্তানিক চুফিত-কুশ্বমাকেরকেশ ভায় ধারে বারে কুটিয়া উঠে। আনোদ ও দৈহিক সামর্থের জভ অনের প্রকার জীড়া আছে, কিন্তু সাম্যোদ ও নৈতিক বলের জভ কেবল সদীত। প্রায় সকল প্রকার আমোদ প্রনোদেই লামির জভ কেবল সদীত। প্রায় সকল প্রকার আমোদ প্রনোদেই লামির জভ কেবল সদীত। প্রায় সকল প্রকার আমোদ প্রমোদেই লামির জভ কেবল সদীত। প্রায় সকল প্রকার আমোদ প্রমোদেই লামির জভ কেবল সদীত। প্রায় সকল প্রকার আমোদ প্রমোদেই আনির জভাতের করিবে পালের প্রায় হার্মান এবং অপর বোলেরজন্ত প্রায় করিবে পালিরে। আনের সমতে প্রায়ের স্বায় স্বায়র জালের ভারতির করিবে পালিরের। আনের সমতে প্রায়ের স্বায় স্বায়র জালের জালের



সময়ে প্রাণে এরপ িম্পুনর কর্লিয়া পরে, মাহা অব্যবিধ আর্মোন প্রমানে অপনীয় হইবার নহে। তথন প্রাণের সে ভালাইটা কর্লেয়া বিতি করিলে সঙ্গালের স্থলিতন্ প্রারাই কলনায়িনী হয়। আবার, অনেক সময়ে প্রাণের আবেগ রুদ্ধবেগ প্রোত্যতীন স্থায় ক্রন্থাকে বথন দোলায়ন্যন করে, তথন নিভূতে নির্ভ্জনে একাকী একমনে সঙ্গাতের হারে প্রাণের আবেগ খুলিয়া দিয়া মানুষ ভৃপ্তিক্রেম্পুন্তর করে। এমন নামুষ নাই যে কথনত হালগের আবেগে সঙ্গাতের আলাপ না করিয়াছে। সঙ্গাতশালের সম্পূর্ণ অনন্তিকে নিন্দর্য হালত হাকতে বিভিত্ ব্যক্তিও কখন না কথনত সঙ্গীতের মুখে মনের ভাব ব্যক্ত করিছে প্রয়াস পাইয়া থাকে। কেন না সঙ্গীতই মানব প্রাণের স্থাভাবিক আবেগ।

ভাব-বিভাবতে বা চিত-বিনোদনে কাব্যেরও প্রভাব প্রভূত ।
কাব্যাও অবসর বিনোদনের পরিত্র সহচর। তাহা হইলেও কাব্য
স্থাতির আনক নিজ্ঞান কল্পনি করে। কল্পনি উৎকর্ষ
স্থাতির যে সৌল্লান্ত্রির কানো বিরোধ প্রিলার, স্থাতির
ভাষা চর্চ্যাহর্ম সাভ করিলারে। প্রাভিত্র সাহার শত সহার
ভাষা চর্চ্যাহর্ম সাভ করিলারে। প্রাভিত্র সাহার শত সহার
ভাগ শক্তি বিরোধিত। প্রভাব বিরোধিত বা সাক্রেরির স্থাতির সার্লার
বিরোধিতা সহার্লা গ্রহণ করেন বাই, কিন্তু তাহার শক্তি সার্লার
বিরোধিতা সহার্লা গ্রহণ করেন বাই, কিন্তু তাহার শক্তি সার্লার
বিরোধিতা সহার্লা গ্রহণ করেন বাই, কিন্তু তাহার শক্তি সার্লার
বিরোধিতা সহার্লা গ্রহণ করেন বাই, কিন্তু তাহার শক্তি সার্লার
বিরাধিতা করিলান প্রত্রেল করিলার সাহার্লার ক্রিরির করেন
বিরোধিতার ক্রিরারির সাহান্ত্র সাহান্তর সাহান্তর করেন
স্থাতির জ্লালার বিরাধি ক্রিরার সোর্ভিত সাহান করেন, স্থাক মালিমাত্রাদির
উপরত্র আরোধ্য, অন্যাহার সোর্ভিত সাহান করেন, স্থাক মালিমাত্রাদির
উপরত্র আরোধ্য, অন্যাহার সোর্ভিত সাহান করেন, স্থাক মালিমাত্রাদির
উপরত্র আরোধ্য, অন্যাহান, কম্পন প্রভৃত্তি বির্য্থ উপথ্য ভাসাকে

্রাপেস্পশ্রিমী করিছে পারের। কবির ছাল **স**ংখ্যা ভাগে বিকাশের উপযোগিনা ৷ কুখন্ড গান্তীয় নাম কুখনত উঠাপন্মায়ী, কুখন্ত वः बारवश्यभी, किन्तु कृदिद कृविष मण्यानं ভाষा छाउँ निवर्ध थारक। হুগারকের স্বর-বিভূতি ভাষাকে অভিক্রম করিরা ধীরে ধীরে, স্তারে স্তারে, তরঙ্গে ভরঙ্গে মনস্তের শতে ধার্বিত হয় এবং এই কটোর স্থাবাময় বংদার হইতে আনাদিগতে তুলিয়া লইয়া যেন এক অনুষ্ঠ, অঞ্চত, সজাত, সম্মাজে উঠাইল লয়। ভা বিভাবন সম্বক্ষে স্বরের যে শক্তি আছে তাহা ভাষার অন্থেক। দূরপ্রত, অফ্ট, করুণ, আর্ত্তবর হালয়কে বিয়াদিত করে তাহা মনেকেই অনুভব ফরিয়াছেন। এরৎ স্থলে স্বর্যাত্রই বিবিধানস্কারভূষিত ভাষার শক্তিষারণ করে। সঙ্গীতের প্রকেও দেই কথা। কাব্যে প্রভাব যেখানে প্রবেশ করিতে পারেনা, সঙ্গীতের শক্তি সেখানে ইন্তজালের তাম কার্য্য করে। ভাল সম্বন্ধে কাব্য এবং নতীতের পরীক্ষা একই নিয়মের অধীন। ভাবদৈশ্য কাক্যের এক গীতের সমভাবেই পৌরব ব্রান করে, ক্রেবল পদ-দালিতা বা সরমাধুর্যা কাব্য বা সঙ্গীতের পক্ষে यदिके नरह । তবে প্রভেদ এই, অর্থহীন পদ্বিতাস প্রার্থিতমধুর হইলেও তাহ ফলাব্য। কিন্তু সভারে: শুর । রামে নে কে ৮. চিত্ত-হরণ করে। দঙ্গীতে শুদ্ধ স্বর অবাছার ক'ব্যে ইলিলেও **অড্যা**ক্তি ख्या मा

বর্তনান শিকার সঙ্গীতের প্রয়োজনীয়তা দিন দিন অনুভূত হুই-তেছে। ননতত্ত্বিৎ ননীবিগণ সঙ্গীতকে সাধারণ শিকার অঙ্গীভূত কলিছে উপদেশ নিজেছেন। পাশ্চানা জনতে আনক স্বলে সভানা সভাবত শিকার প্রস্তাভূত হত্তলাত । প্রতাল জি দিন দিন প্রসার লাভ করিবেছে। প্রতালিত স্থান্ত শিকান্তে আন্ত্রানাই নীত্রন



অসমপূর্ণ ও অতৃপরে।গী মনে করেন। প্রকৃত প্রভাবে প্রচাশত সাধারণ শিক্ষার সাধারণ জান বাধন পক্ষে মানব মনের যে সকল इতিত সংখ্যা আছে, ভাগাইট বিকাশ পার ; কাপর সকল সৃতি। পদ্তি পাইবার জবিদ পার মা, শিক্ষা অসংপূর্ণ রহিয়া বার ; নাকে মনের আপশিক বিক্তাশ হয় মণত। বিশেশকা ক্রিক ভেরের বিস্থা विक्रमात्र करम्पूर्वक् यहार छोडे हिमास समुक्त । व्यवस्था विकास শক্তির অভিতর পর্যান্ত ধার্যান্ত পাত্র সার না : প্রারুতি-নিষ্টিত শক্তির বীজ চর্চার অভাবে অন্তরেই শুকাইয়া যায়। যে বালক সঞ্জীত বা অন্ত কোন বিদ্যায় অদ্বিতীয় পণ্ডিত হইতে পারিত, তাহার মানদিক শক্তি, আধুনিক সাধারণ শিক্ষার বিষয়সমূহে তাদুশ স্ফুর্ত্তি না পাওয়ায় মে জড়ালি মূর্য নামে অভিনিত হুইরা সামানে কীউদেই কুলুন শোষ্টকর মাত শুরু হছিল। মাত্র ৷ এইজন্ম সাধান্ত শিক্ষার প্রানার রন্ধি কলিতে সংক্রেক ই খার ব্রাপ্ । ভাষোদের দেশে । ভাষান শিক্ষার মধ্যে চিত্রবিদ্যা প্রবেশ লাভ করিয়াছে। সঙ্গীত বিদ্যাভ যোগ্যস্থান লাতে বঞ্চিত হইবে না, এইরপ আশা করা যায়।

সঙ্গতিশার দেশপ শ্রেষ্ঠ, ইহ'র সাধনাত সেইরপ ছবত।
কোলমান্ত সাধনার জাগের জন্ম ইহ' হাদুশ ছুল্লই নাই : ইহ'র
সাধনায় চিত্তত্তি প্রবং চরিয়ের প্রতিত্তা একাত আহম্মক।
উদ্বাধী ইন্দ্রি সমূহকে স্তার নহামে লখিয়া এবা চক্ত চিত্রান্ত্রক
ভিব করিয়া সমূহকে স্তার নহামে লইছে হইছে হয়। স্ক্রীতে দৈতি ব
নাজাত একাব প্রয়োজন। ইহ'ছে হ'হছে প্রতিত্ত প্রতিত শাক্ত
স্ক্রান হয় না। সমূহকে নাইব বি কারতে না প্রার্থক স্ক্রীতে শাক্ত
স্ক্রান হয় না। সমূহকে — স্বত্তিক বেকী। গান্তিক। এক





করিতে পারিকেই গায়ক হয় না। পালকেন তিনা দেশে লক্ষা করিয়া দ্দীতশান্তের পবিত্রতায় কলম্ব আরোপ করিলে অবিচার হয়। অবশ্য বাঁহারা প্রকৃত-প্রভাগে দ্দীতি লাখক, তাঁহাদের মধ্যেও চুই একজনের চরিত্র কথন কথন কল্মিত দেখিতে পাওয়া হাট; কিন্তু এরূপ দৃতীতে বিরল। জিতেন্তির বাগিগণের ফেরুপ পদস্থলন হইরা থাকে, তাঁহাদের পদেও দেইরূপ। তাহারা ভ্রমার্থার জলভোচ করিয়া থাকেন। ছন্চিকিৎত ব্যাধির আক্রমণে জীবনের স্লখ চিরলরে নতা হইয়া থাকেন। ছন্চিকিৎত ব্যাধির আক্রমণে জীবনের স্লখ চিরলরে নতা হইয়া বায় এব সরশক্তিও হান হইয়া পড়ে। ফলতঃ ঘাহারা দৃদ্দীতশান্তের আলোচনায় জীবনোৎদর্গ করিতে চাহেন, তাঁহার শুদ্ধাচার দ শুদ্ধাহার না হইলে সিদ্ধিলাভ করিতে পারিবেন না। স্লীত শিক্ষার্থা, শরীরেক সকল, চিতকে প্রকৃষ্ণ ও পবিত্র এবং আলোকে বিশ্বন্ধ রাথিয়া স্ক্ষাত্রচর্চা করিবেন।

সঞ্জীত সাধনায় সদ্গুরুর সাহায় ব্যতীত সিদ্ধিলাত অসম্ভব। ।
কিন্তু আহাদের দেশে দিন দিন সদ্গুরুর সংখা হাস হইয়া
আসিতেছে। আবার সঞ্জীত শিক্ষকগণের হৃদরে স্থান, কাপটা
শুভূতি বিধ প্রবেশ করায় অনেকস্থলে শিক্ষার জন্তরায় হইনা
দাভাইয়াছে। অনেক শিক্ষার্থীও শিক্ষকের নাম পর্যান্ত মুখে না
আনিয়া বরং তাহার নিন্দাবাদ করিয়া থাকেন। কিন্তু এরপ ভাব
লখুচেতা অল্প ব্যক্তিরই সদত্যে স্থান পাইতে পারে।

সঙ্গীতকৈ অনেকে বিলাদের সামতী বলিয়া মনে করেন।
সঙ্গীত অনেক সমতে বিলাদিতার অস্পাভূত হইয়া পড়ে জীকার করি,
কিন্তু তাহা সঙ্গীতের ধর্ম নহে। যোগী চুগ্ধ পান করেন যোগ
সাধনের জন্ম কেন্দ্র করেন ভোগে সামত পরিত্রপ্রির জনা।

क्ष्मसुक्रमण्याची तक्कष्टकाराओं क्षाता के ता अस्तिक विकास के क्ष्मां के क्

দক্ষা স্বপ্তাল করে পর্শব ধরা রাজির ক্রেন। স্বপ্তালে শিশুনির্বার জীবন রক্ষা হয়, ভূক্তানে তলবাদের তলর্ভিন হয়, ভূক্তপানে সংগ্র বিষকোষ পূর্ণ হয় ; কিন্তু এজন্ম সুদ্দ সোলালা হইতে পারে লা: সঙ্গীতের পক্ষেত্ত সেই কথা। তামসী প্রকৃতি সঙ্গীতকে ক্রাপন সংক্র টানিয়া মানে এবং জঘন্ত জুগুপিত আনোদে সঙ্গীতের বিবেচার করে। সকল ভাবে এবং সকল অধস্থায় সঙ্গীতের অধিকাদ বিশ্বই এরণ ঘটিয়া থাকে! ভূমি সংসারত্যাগী বিষয় বিরাগী যোগী, সঙ্গীত তোমার প্রাণায়াম যোগ; জুমি ভোগবিমূদ বিলাদবিশ্বল বিষয়ী, দঙ্গীত তোষার আনন্দের উৎস ্ভূমি অনলম পরিশ্রমণীল কর্মানীর, সঙ্গীত ভোগার অবসর বিনোদনের অমৃতরস : তুমি বৃদ্ধ-বীর, সম্বীত তোমার রণোমাদের উৎদাহ তরঙ্গ। তুমি শ্রমবিষ্থ রাধা প্রবাহন সন্তিমন্ত্রনে, নকী বা সুস্থান্ত আজহরমূদত পানিত্র সমূহত ত প্ৰতিয়া মূখ্, তিনিক্সিয়া, মিকিয়া, কাছ, ইয়ের, সহা, নির্মা সক্ষেত্র । পদে দলীত প্রথমের প্রথম। সেই জন্ম স্থাত্তক মহাত্তি তানসেন বলিয়াছেল "নাম ঈশ্বর্জনী অমত্তর: ", "গিতুল: বাচ্য, বিশ্বে তিত্যোট পীজিনে, অধীৎ নাদ সম্বল্পী অন্তের এম : ইন্ট্রে ভাষে হছপ যাওটক মটে, বিনি ওবটকুই পান করন।

মন্ত্ৰীত মাজিকানো নীয় স্থামারং । কিন্তু ধর্মিনান সমানে ইছার মোগেছের অনুক্রা সম্বাদ ধরা সমানের নাই । সাকান আনুক্রান ভারতিকিন দিন জীন ছইয়া অভিযাতকৈ : অন্ত্রে তার উন্ধ্রনার ইনিটা ইইয়া অভিয়েক্তি । উহা আত্তার মারতার আনটি লক্ষণ মন্ত্রীত অভিয়ে হারতে অনিত শক্তি স্থারে । মন্ত্রিয়া ও ইনি ভারত সহিত্যক হারতে অনিত্রতার উল্লেখনামন্ত্রী বাতি একালিন ও ইনি পুই সহার অভ্যা আনিবাধ্য নাম্পাতি উন্ধ্রিক ক্রিড়া। এইন স্থা



নিজনের পুরনাও নাই, সে ক্ষেত্রনাগ্রাহিত বাই, চারন্যনের
নাই ইনালের বিভিন্ন হিছে এপ্ত প্রায়। এখন ছার্নাম প্রারুতি
আনাহিত বাগে হইলাছে। মহান আনার পরিমানি শুল বিশানেরই
সাম্রাই ইমাছে। পান শহর, হিছেলাল, নালক, ভৈরা, নটনারাক
প্রভাবি ইমাছে। পান শহর, হিছেলাল, নালক, ভৈরা, নটনারাক
প্রভাবি ইমাছে। পান, গ্রারুত্র নির্দেশ বাহন বার না।
বিভিন্ন প্রায়ের নিন্ধ, গ্রারুত্র নির্দেশ বাহন বিল্লাপ বাহন
ভঙ্কন, প্রারুত্র নিন্ধ, গ্রারুত্র চালিয়া দেয়। যাহা হউক জাতীয়
রুক্তির পুনর্গানে হিন্দু মানীতশান্তের পুনরুজ্জীকন একান্ড প্রয়োজন।
সম্পাতের প্রান্ধী শক্তিকে পুনরুজ্জীকন একান্ড প্রয়োজন।
সম্পাতের প্রান্ধী শক্তিকে পুনরুজ্জীকন একান্ড প্রয়োজন।
সম্পাতের প্রান্ধী শক্তিকে পুনরুজ্জীকন একান্ড প্রয়োজন।
স্থানার ন্রশক্তি সক্ষার কলিকে স্কুলেশ-প্রেমিক স্থাপিন অন্ত্রুদ্র
হটন—সম্পাতের নর্ধা গ্রাম্বী শক্তি আলা, ফালিয়া উচুক।

April popular

সঙ্গীত-দাধনা

স্থর ও মাত্রা সংযোগে সঙ্গীতের স্বষ্টি ! 🌣 মনুদা-কণ্ঠোখিত স্বর সমূহের উচ্চতা, কোমলতা, কম্পন প্রভৃতি নির্মিত করিবার প্রশালী ইহাতে বালোচিত হইয়াছে। বাদ্য এবং দুতা, সম্নীতের সহচারিত্ব করে। সেইজন বাদ্য এই দুত্য দলীতের অস্নীভূত হহিনা মন্ত্ৰীত শান্তের পূর্ণ তিতেই মূর্ত্তি প্রকাশ করিয়াছে। 🕆 সদৃগুরু সন্মিধানে শিক্ষালাভ বাতীত নঙ্গীত শাতে প্রবেশের জন্য পথ নাই। তথাপি সঙ্গীত সভাষে অবশ্য জাতকা কতকপুৰি নিকা এছান সংখেপে বিব্রত হইল। যাঁহারা সঙ্গীতশাল্রে গুরুপদিউমার্গে ক্যঞ্চিৎ প্রবেশ লাভ করিয়াছেন, তাহারা ইহার দারা সঙ্গীত সাধনার য়গ-তত্মগুলির আভাদ পাইবেন। এ এতে মৃত্যাদির কোন বিশেষ উল্লেখ রহিলনা। সঙ্গতি সাধনা সদ্ধন্ধে নব্য-সঙ্গীত-নামুক তানসেনের যে একটি গীত আছে, তাহাতেই সাধনার পথ নির্দিষ্ট হইয়াছে। र्जानरमन गाहियाएक्न "প্রথম খরজ, নাধ, देत अधव, গান্ধার, মধ্যম, প্রথম, বৈশত, মিখ্যাদ, ভাল মাও, ডিফা এলে, শুদ্ধা আকর প্রামাণ : যুদ্ধা মূৰ জাপন মন্দ্ৰে যথ সমবাচাৰ ছব প্ৰশিক্ষা মেটি নাগতে চুলা কি জিরে। একইশ খ্রজনা, উন্পক্ষণ কোটি সান, এই- এবঙ হো দৰ অন্তৰ দৌ গাবে, ঠিক ভাৰ, শুদ্ধ ভাৰা দাভি ভাৰে কেই ইলই প্রাট ফের ফের মার মার্থকর, ধ্রপদক্তি মধ্য ডিয়ের কর লি ভিয়ের ব

ষড়ক, ঋষ-৪, গাড়োরি, মধ্যম, লক্ষম, বিধনত, নিধানে এই গাও

[&]quot;ধানু সাক্রা স্থাব্দাং গাসাফ্রান্ত কুলি

翻 化原管工作 化量 工作 医静脉后线性二甲腺红斑性

PROGRAMME OF SELECTION SERVICES CONTRACTOR

সপ্তস্থর বা সপ্তস্তর।

अञ्चो इनसभ्यत् ।

গৈলত ও মাতকের বৃংহতি হইতে নিধান এই সপ্তসর। # সকল অন্য একাধিক যাবের আভাস লক্ষিত হাইতে পারে; কিন্তু यात्रत देशान र तरा तथा काम करिएत अहे मखिरिय आजाविक प्रयुद्ध স্কেঞ্ সাল্লনিক বলিং। প্ৰতিভাত হুইবে না। কল্পনা কথন্ত একশ্রে লক্ষাপুর হয় না। কোন একট সাল্ভা বা সহয় না গুলিয়াল ক্ষেত্ৰী ভূটটা বিভিন্ন প্ৰান্তে সন্মান্তৰ সূত্ৰপাত কল্পন কবিল্য পাৰে না। প্ৰশংৱ সামন্ত্ৰনাত্ৰ অক ন্থানিকান্ত **ং**ই ্লসমূত্রন বিভিন্ন লাভেল । সামির প্রারার বহাবির। কিন্তু সকলাই দর্মে । क्षाप्तक मात्र क्रिकेट श्रीजाराव राज्यासम्बद्ध (intensity) । बहुत ্রার রেয়ারিকের শব্দ পের পার শুনিকেই বুরিক্তে পারা মার্য, কেকা ্রবা সভাতে কি প্রেডা। সাহাট রউক, রেমন বেতে, ত্বণ প্রভতি সকল বাড়ুই পুরু ভাজ ইছাপুনর ভূলনায় অন্যূপদাপ্থর আনুপ্লিক গুরুত্ব নির্দ্ধারিত হয়, এবা খেত, লাহিত, দীলাদি সপ্তবর্ণ হইতে নানাবিধ বর্ণের বিকাশ হয়, আর একটি বর্ণের তুলনায় অপরগুলির গাঢ়ম্বাদিও নিগাঁত হয়,—সেইরপ এই সপ্ত খরকে অবল্যন করিয়া সক্ষ ধ্বনির্মাই পরিমাণ পাওয়া বার ৷ আবার এই সপ্তস্তরত এক বড়জ হইতে অনুস্যত হয়। যড়জের মহিত অন্ত খারের ভেন্ন তীত্র-ভার মাত্র। কেকা সরকেই স্বর পরিযাণের আদর্শে (unit বা standard) প্রস্পৃত্তর জন নিকারিত হইয়াছে। এই ক্রম একবার প্ৰিথত হাইকে পায়ক যে কোন হতকে আদৰ্শ কৰিয়া ভদকুদায়ে ইফামত ভ্রমপুর প্রাকাশ ওরিতে পদর্ম। এক এই ছিমাদ্র বিভিন্ত বিশ্বস্থাক বিশ্বস্থাক বিশ্বস্থা

 [ী]মধুন ধনভভাগে- ক্রণাল ক্রাক্তিক;
 মাংক্তি ক্রেণার: ছবাচনদান্ ওচামান্ " – ৪লীত-দলমান্

इकर्ष (मंग) राखिक अहे मधुस्तात्त्वत का कि । वर्षाय मां इहेर्ड ঋ, ঋ হইতে গা ইন্তানি কি প্রকারে উখিত হয়। ইহাদের ভারতার (intensity)পার্থকা কিরূপ নিয়মে শাসিত। একস্থর হ**ইতে অভায়রে** অধিচেছদ গতি কেবল শ্রবণেন্দ্রিয়াগ্রাহ্ম ; শুনিয়া ইহা লক্ষ্য করিতে হর এক লক্ষা করিতে করিতে ইহা আয়ত হয়। এক বিন্দু তেল জনপাত্তে নিক্ষিপ্ত হইলে বেমন অতি দুক্ষা পভিতে বিদৰ্শিত ইইয়া জ্বলের উপরিভাগে ব্যাপ্ত হয়, সেইরাপ অভি দৃক্ষ তরঙ্গে এক হর অন্য হারে পরিণত হয়। এইরূপ বতগুলি দুক্ষা ভরুপ স্বর্গান্তরে শ্রেণিত-গোচর হইতে পারে, ভাহাদের প্রত্যেকটিকে 'শ্রুডি' বলে। সপ্তক নধ্যেএইরপ দাবিংশতি ভার্গত আছে।# নগীতশান্ত্রে এই শ্রুতিশুলি ভিন্ন ভিন্ন নামে কথিত হইয়াছে এবং তাহাদের জাতিভেদও নির্দেদ শিত হইয়াছে। কিন্তু এ বিষয়ে বিস্তার আলোচনা এন্থলে নিপ্রোয়ো-कन । अञ्चल द्वरान्द्रवर्तिनी व्यक्तिकार मध्या शक्ति । ষভজ, মধ্যম ও পঞ্চমে চারিটি করিয়া, মাত ও ঘৈবতে তিনটি করিয়া, এবং গান্ধার ও নিয়াদে সুইটি করিয়া শ্রেডি। প অর্থাৎ স্তরান্তর প্রাপ্তি-কালে যভটুকু সূক্ষা স্বরভেদ কর্ণে অনুভূত্ত ছইতে পারে, তাহাতে বুঝা বায় বে, 'সা' হইতে ঝএর মধ্যে ৪টি শ্রুতি, 'ঝ' হইতে গুএর মধ্যে থটি, 'গ' হইতে মধ্যর মধ্যে ২টি, 'ম' হইতে পথার মধ্যে ৪টি, 'প' হইতে ধএর মাধ্যে ৪টি, 'ধ' হইতে নিএর মধ্যে ৩টি, এবং 'নি' व्हेर्स्ड 'मा' २छ ।

[&]quot;চতব্রঃ পর্বধ্যে বড়ছে সর্বাদে প্রত্যোলতাঃ। ব্যবহৃত ক্ষতে তিবঃ যে গান্ধারে নিয়াদকে ।"—-সন্ধীত-রস্মার্থনী।

क्रमा का जा श ला मि भा

এইরপ ২২টা হ প্রতি-নিবদ সাতটি সার একতে সপ্তক শ নামে অভিহিত হয়। স্থারের জ্যোচ্চতা অনুসারে সপ্তাক অনেক হইতে পারে, কিন্তু সমুয্যকণ্ঠ-নিংসত স্থারে ত্রিসপ্তকাই গণনীয়। এই জিমপ্তক হানয় কণ্ঠ ও নপ্তক হইতে উৎপন্ন হয়, তদমুসারে মানুর, মাধ্য ও তার নামে অভিহিত হইয়াছে। সাধারণতঃ এই জিমপ্তক উলাত অনুলাভ ও সারিৎ বা উদারা মুদ্দারা ও তারা নামে অভিহিত হয়। গায়কের মুদারা সপ্তকেই সাধারণতঃ গাঁও গাহিয়া থাকেন; কথনও বা মুদারা সপ্তকেই সাধারণতঃ গাঁও গাহিয়া থাকেন; কথনও বা মুদারা সপ্তক হইতে তারাসপ্তাকে কণ্ঠন্থর আরোহণ করে, কখনও বা উদারাসপ্তাকে অবরোহণ করে। ধ্বানি স্থা হইতে স্থাতরে উটিলে আরোহণ বা অনুলোম নামে অভি-হিত হয়; এবং স্থার হইতে স্থাভারে নামিলে তারােহণ বা বিলোম নামে কথিত হয়। যথা—

মুদারাসপ্তক

ভালনগুক

সা ক্ষাৰ নি সা আল লাম কাম কিটি ইহা অকুলোম বা আরোহণ দাধন:।

धुनात्रामश्चेष

जेतांदामश्चर

মি ধ সাম র ঝানা নি ধ সাম র মা এবং ইহা বিলোম বা অবরোহণ সাধনা।

ত্রীব্রাক্ষণত্রী বাল সালন্ত্র সাধ্যক্ষণ

 চর্বার বা মঞ্জনিত্র বা করা নিয়াক হাত

 ক্রিরা এক নিয়াক বা জ্বার বা প্রকার প্রশাসনিক ।

 ত্রীবিশ্ব কা করা ইবে আছা বা ম্বর্ক আছা হাত

 ক্রিরা বা করা করা ইবে আছা বা মন্ত্রা হাত

 ক্রিরা বা মেনাবিশ্বিত হা নিয়াক বিবাহে ক্রিরা করা হাত

 ক্রিরা বা মেনাবিশ্বিত হা নিয়াক স্কর্মান করিবে ক্রিরা করা করা লগত

 ত্রীব্রা করার ভ্রম্ম বিশ্বকার সালন্ত্রী বা স্কর্মির করা লগত

 তিন্ত্রী স্বাধান্ত্রী বিশ্বকার সালিক স্কর্মী বা স্কর্মির সালিক স্কর্মী বিশ্বকার সালিক স্কর্মী স্কর্মী বিশ্বকার সালিক স্কর্মী সালিক স্

RARB BCOL

এই প্রস্তারের কেনি একটি স্তর্ক অপ্রদান করিয়া অপর প্রবভাবিতে আরোহণ বা অবরোহণ দঙ্গীত শাস্ত্রে মুর্চ্ছনা * নামে অভিহিত হইয়াছে। এই সহু স্থারের মধ্যে তিনটি স্থাং প্রধান বলিয়া পরিগণিত। এই প্রধান তিন স্তর হইতে তিনটি গ্রামের উৎপত্তি। এই তিন আন তান এক মূচর্ছনার প্রধান আতায়। এই তিন প্রায়েমর নাম ষড়জ, মধ্যম ৬ গান্ধার : অর্থাৎ 'দা'কে অবলম্বন করিয়া যে সর্প্রাম ভাহা বড়জ, 'মা'কে অবলম্বন করিয়া যে স্বরপ্রায় তাহা মধ্যম এবং গাস্ধারকে অবলম্বন করিয়া যে সর্গ্রাম তাহা গান্ধার। এই তিন आहर इत्तर मुर्ह्मा अकिरिश्चि मध्याक । व्यर्थाद मा, स, भ, म, भ, ध, नि, ना; अर्था, ग न ध नि मा आ; ग न न ६ नि मा आ ग, हेडाफि সপ্রবিধ দুর্জনা প্রত্যেক গ্রামে দাধিত হইতে পারে; এইরূপে ত্রিসপ্ত দংখ্যক মূর্চ্ছনা গণিত হয়। কিন্তু তিন গ্রামের মধ্যে প্রই ্রাম মানব জগতে প্রচলিত। তঃ গাড়ুর অর্থ বিস্তার; তান শব্দে স্তারের বিস্তার বুঝায়। স্থতরাং হুর হুইতে স্থরান্তরে অনুলোম বা বিলোম গড়িতে নুর্জনাদির খালা রাগের বিভার বুঝার। তাম নীয याषी यदमांछ । हेरु आद्याः छन्टा ग्रावकट सा मा । এবং টপ্লায়তই ইহার শ্ববিকাশ। হুরও দ্বিবিধ,—শুদ্ধ বা প্রকৃত : কুদ্রিয় বা বিষ্ণুত। সপ্তস্তরের যে স্বাভাবিক ক্রেম প্রাছে, তাহাই প্রকৃত শুদ্ধ প্ররাদ কিন্তু দর্শীতে এই স্বাভাবিক হারকে কথনও বা কোমলভাবে কথমও বা তাঁব্রভাবে গ্রহণ করিতে হয়। স্বাভাবিক স্তুরে যথম এই কোমলতা ক তাঁব্রতা আনিতে হয় তথম সেই ন্তরকে বিকৃত বলা যায়। সাধারণতঃ সঙ্গীতের ভাষায় ইহার নাম

> "আরোধনাবরোধেন জ্যেন সর সন্তক্ষ সূর্জনা শব্দ বাচাং হি বিজেয়ং ভবিচক্ষরের 🐪 নং 🕶

Mrs-4212.

কড়ি, কোমল; অর্ধাৎ উচ্চ হ্রর কড়ি এবং নিম্নস্থর কোমল। এইরূপ ৭টি স্বাভাবিক শুল প্রাকৃত হার এবং ঐ সপ্তহার হইতে ৫টা বিকৃত হইয়া ঘাদশটি হার সৃহীত হইয়াছে। এ বংগা প্রাকৃত হার দা ঋগ ম প ধ নি, বিকৃত হার,—

হারে অধিকতর মনোহারিত্ব আনিবার জন্ত গনক, কম্পান, আশ, মীড়, গিটকারী প্রভৃতি ব্যবহৃত হইয়া বাকে। গমক কম্পানের সামান্ত নাম। কম্পান হার বিশেষের জ্বতান্দোলন। আশ বর্ণান্ত-র্বার্তী দ্বরের ছুই বা ততোধিক হারে অনিচ্ছেদে বিকাশ। মীড় আশেরই ঘনত। শিবান্থারে মীড়ের দৃষ্টান্ত বেশ বুঝাযায়। গিটকারী একাধিক হারের আশসহকৃত জ্বতোচ্চারণ।

থিটকারী দ্বিবিধ—সাদা । সগমক। ভূথিকা, হর বিশেষের পূর্বের বা পরে অন্য হ্রের স্বাল্লোচ্চারণ। সাধারণতঃ হর সম্বন্ধে বে সকল বিষয় জ্ঞাতব্য ভালা বর্ণিত হইল।

বিবিধ হুরের যথান্থান সন্ধিবেশে রাগরাগিণীর যুক্তি প্রকাশিত হয়। রাগ রঞ্ধাতু হইতে উৎপন্ধ। রঞ্ধাতুর অর্থ রঞ্জন বা চিত্রবিনাদন। যেরূপ ভাবে হরে বিভাসে চিন্তরঞ্জন লাধিত হয়, সেইরূপ হার বিভাসে ভিন্ন ভিন্ন রাগরাগিণী হৃষ্টি হইয়াছে। প অর্থযুক্ত বাক্য বা ছন্দে রাগ রাগিণী নিবদ্ধ না করিয়া, তেনে তুম প্রভৃতি কতকগুলি নর্ণের দারা আরোহণ, অবরোহণ, মূর্চ্কনা, কম্পন্ম,

^{&#}x27;বড়জোহ্চলঃ প্রথমণ্ড খন্তজ্জাতি স্বরঃ। ারিটের মধানশ্চার্থ নিবাদেন দৈবত্তপ্র ।"—স্ক্রীত নামোলর।

[†] শিশু এবশ্যাকৈটে কুমান্ত স্কুকা্ কুন্দেশ্ । সংক্ষাং রম্ভনাকেটেল স্তম বাপ টানি স্মৃত্য ॥"১৮০ব্যাস্থা ।

ভান, লয় প্রভৃতি যোগে কেবল স্বরমূথে রাগানের পরিচরের নাম আলাপ। আলাপে রাগরাগিণীর স্বরময়: মূর্ত্তি প্রকাশিত হয়। রাগারাগিণীতে বে স্বরটির প্রধানতা দৃত্ত হয় ভাষার নাম বাদী—যে স্বরটি বাদীর সহচারিত্ব করে, ভাষা সংবাদী এবং বে সকল স্বর এই উভয় স্থারের অনুগমন করিয়া ভাতি হথ সম্পাদন করে, ভাষারা অনুবাদী নামে অভিহিত হইয়াছে এব গে স্বর রাগ বিশেষে বিভান্ত অপর স্বর্জালার দহিত অনৈক্য হয় ভাষা বিশাদী। ৯ রাগের আদি স্বর গ্রহ্মর, এবং অন্তা স্বর ভাসাম্বর নামে অভিহিত। স্পীতে ভ্রম চতুম্পদী গৃহীত হওয়ায় রাগরাগিণীর আলাপেও সেইরপে চারিটি অংশরূপে দেখান হয়, আস্বারী, অন্তরা, সঞ্চারী, মালোগ। গং

রাম তিন প্রকার শুদ্ধ, সালক্ষ, ও সঞ্জীর্ণ। স্বরু-সিদ্ধ রাগ শুদ্ধ রাখ। য় ছুই রাগের সন্মিলন যে রাগে ঘটিয়াছে তাহ সালক্ষ এবং ছুরের মধিক রাগের মিশ্রণে যাহার উৎপত্তি তাহা সঞ্চীর্ণ। স্থর সংঘটিয়ার ছিল বিশিক্তির দৃষ্টি হয়। যে রাগে সপ্তস্থারের

শিব্যা হার্থন ব না হা বা বাবা বা বার্থার বাহন্ত বির্থা বিরথা বির্থা বির্থা বিরথা বিরথা বিরথা বিরথা বিরথা বিরথা বিরথা বির্থা বিরথা বিরথ

गक्रीक मध्या ।

বিকাশ হয়, তাহার নাম সম্পূর্ণ রাগ। যাহণতে এক গুর বর্তিরত অর্থাৎ হয় প্রবের বিকাশ তাহার নাম বাড়ব লা থাড়ব এনং পাহণের তুই গুর বিকাশ তাহার নাম বাড়ব লা থাড়ব এনং পাহণের তুই গুর বিকাশ তাহার নাম ওড়ব। ক শাস্ত নাগ ছয় ও রাগিণী ছবিশ। রাগ ও রাগিণী থানের নাম বাঙ্গের শাসের ভিন্ন ভিন্ন মত দৃষ্ট হয়, এতদারিভিন্ন নিশ্র রাণবাহিণা ও আনেক ক্ষেই ইইয়াছে। রাগওলি পুরুষ; রাগিণীগুলি স্ত্রী। প্রতাকে রাগের হৃহৎ পরিবার। বে বকলের সফিতার পরিচয় এন্থলে অনন্তব; সকল রাগ রাগিণীগুলের আলাপের কাল ও নির্নাপত আছে। এবং ভিন্নাভিন্ন রাগ রাগিণীগুলির আলাপের কাল ও নির্নাপত আছে। এবং ভিন্নাভিন্ন রাগ রাগিণীগুলির আলাপের কাল ও নির্নাপত আছে। এবং ভিন্নাভিন্ন রাগ রাগিণী ভিন্ন বি ভাবেরও উপযোগী বলিয়া হণিত ইইরাছে। বর্তমানে রেক্ষার মতামুবলী রাগ ও রাগিণী নিল্লে প্রদর্শিত ইইল। প্রারাগের ভার্যা—মালজী, ত্রিবণী, গোরী, কেদারী, মধুমাধনী, পাহাড়ী। বসন্ত রাগের ভার্যা—দেশী, দৈবগিরি, বৈরাটী, টোরিকা, ললিতা, হিণ্ডেল। বিভান, ভুপারী, কর্ণটি প্রেক্তির নাম্বাভানী, প্রারাণের ভার্যা—বিভান, ভুপারী, কর্ণটি প্রকানিকা, নালভান, বিভান রাগের ভার্যা—বিভান, ভুপারী, কর্ণটি প্রকানিকা, নালভান, বিভান রাগের ভার্যা—বিভান, ভুপারী, কর্ণটি প্রকানিকা, নালভান, বিভান রাগের ভার্যা—বিভান, ভুপারী, ক্রাণী, রামকেনী, প্রকারী, বিরাণির ভার্যা ভার্যা—বিভান, ভুপারী, শিস্তালী, সৈন্ধানী, রামকেনী, প্রকারী, প্রকারী, প্রকারী, বিরাণির ভার্যা ভার্যা—বিভান, ভিন্নবিলী, সৈন্ধানী, রামকেনী, প্রকারী,

প্রদক্ষর। -ভৈরত রাগের ভাগা--- ভৈরতী, পান্সালী, দৈয়লী, রামকেনী, গুরুরী, গুলকেরী। নেঘ প্রাণের ভার্যান- মলারী, দৈরিটী, সংযোগী, কেপ্তিকী, গ্রাহ্মানী,

হরপুর্বার ৷

 [&]quot;উডবং গঞ্জিটান্তৰ বাউদ্ভানন, সংবা, ভংনৎ
বিশ্বাহ দপ্তিটান্তৰ বিশ্বজ্ঞান্ত গ্ৰাহান্ত, ভং "—মাত্ৰৰ (সন্তা) কৰাছাকৱা);



নটনারায়ণ রাগের ভার্যা- -কানোদী, কল্যাণী, আভিরী, নাটিকা, সারস্থা, স্থানিরী।

আলাপে রাগানির স্তর্মনী মৃতি এক পানে তাহাদের কার্যারী মৃতির প্রকাশ হয়। গান্ধ নানা প্রকার মধা;—প্রকাশ বা প্রপদ, খোরাল, টগ্লা। লালিত পদ বিভাবে প্রপদ অর্থাৎ ভজন।

ভাগ প্রগাঢ়তা ও রচনা-গান্তীর্য প্রদানর লক্ষণ—ইহা ওজঃ
প্রদান ও মাধ্র্য তা বিশিষ্ট। এবং ইহাতে চারিটা বাণী প্রচলিত
বন্ধা, গওরহার, নওরহার, চাগর এবং থাঙার বাণী। গোয়ালিয়র
হইতে গওরহার, লাহোর হইতে নওরহার, দিল্লী হইতে ডাগর ও
কাল্যহার হইতে থাঙার বাণীর উদ্ভব, এইরপ কথিত আছে।
থেয়াল—অল্লাকর ললিত পদ বিশিষ্ট কবিতা বিশেষ। ইহাতে আদি
করণ প্রভৃতি রদ ভাল খুলে এবং অরের ক্রীড়া অধিক প্রকাশ পায়।
টিয়া। ইহাত ললিত পদ বহুল এবং লয়ুভাবের উপযোগী।
প্রাচীন হিন্দু সন্ধীত শাদ্রে দপ্রস্থারের আবার পৃথক পৃথক জন্ম
স্থান, রাতি, বর্গ, ইফানেবতা। ক্রী ও পুত্রে নির্দ্ধিক আছে। * এবং প্র





সংস্থারের মধ্যে সহিত স**রজও ছিন্নীকৃত রহিয়াছে।
এ সাহজে** সবিভার সালোচনার বিশেষ প্রয়োজন নাই; এজন্ম শাস্ত্রীয় প্রমাণ শুলি যাত্র প্রদক্ত হইল—

অনেত ক্ষেত্রেই গীতের সহিত বাদ্যের সংযোগ থাকে। বাদ্য সঙ্গীতের নাজার অনুগামী হয়। গীতের ছন্দ ও বাদ্যের ছন্দ, গীতের ঝোঁক ও বাদ্যের ঝোঁক, একরুপ। বাদ্য সম্বন্ধে মাত্রা ছন্দ লয় ও তালই প্রধান মালোচা বিষয়।

মাত্র। †

একটি সর উজারণ করিতে বত সমর লাগে তাহাকে মাজা বলে। মাজা জিবিধ যথ ইঅ, দীর্ঘ, প্লৃত। একটি দ্রত্ম অরের উজারণকাল রুজনাজা, ছুইটি হ্রত্ম অরের উজারণকাল প্লার্থমাজা; তিনটি বা ততোধিক হ্রত্ম অরের উজারণকাল প্লুত নাজা। ফা হ্রত্ম বর্ণোজারণের নাম ব্যঞ্জন ইহা অর্দ্ধ মাজা। অর্থাৎ একটি নাজাকে আদর্শ করিরা ভদকুসারে মাজার ক্রম নির্দ্ধারিত হইবে। কোন কোন মতে একটি বর্ণের বা পাছটি বর্ণের জনতোজারণে বে সমর লাগে তাহার নাম মাজা। ইহাকেই আদর্শ ধরিলে ভদকুসারে অত্যান্থ মাজা নিরানিত করিলে কল একই হইবে। যাহাকে ছ্র মাজার প্রকাশ করা যায় তাহাকে বার মাজাভেও উজারণ করা বাইতে পারে। মাজা, বাদ্য এবং গীত উভয়েতেই দৃষ্ট হইবে

 [&]quot;त —श्री वीरतरहृद्ध (बोरहः का वीष्ठराः क्यांगरकः)
 कारमी अ—नी छ कसंद्रभ दाम्म स्थानता प्रीक्षी ॥"

মান ক বাৰাস্থাপনি বাসালৈ আছনভাল লৈ ভালিলোল

[ি] চাধ্যজ্ঞকান্ ওদেক্সান ভাগত্তাকালত গোদ । বিষয়ক শিখী জ্বোধ সঞ্জন্ধদলত কং



ইছাই বাদ্য এবং গীতের কাল ও ছন্দ নিরূপিত করে। মাত্রার উচ্চারণবিধি এবং বিরাম ছন্দের জনক। এইরূপে কাল্যে বেরূপ ছন্দ ধ্বনিত হর গীতেও সেইরুপ ছন্দ নিবন্ধ থাকে। কার্দ বাদ্যের ছন্দ, গীতের অনুকরণেই এথিত।

লয় অর্থে সাম্য অর্থাৎ সমান হওৱা বা মিশির মাওয়া।

হতরাং হ্রকে নাজা ছন্দ ও তালের সহিত একীকরণ বা নির্নিত্তই

লয় শব্দের বাচা। হারের উত্থান, আকাজ্রাও নির্নিত সাছে।

আলাপের সময় ইহা মাত্রা মাত্রেই লক্ষিত হয়, এবং গীতের সময়

ইহা ছন্দাকারে নক্ষিত হয়। লয় জিনিং.—বিলম্বিত, জনত ও মধা।

যাহাতে হারের মিলন অল্লায়ায় তাহা জনত লয়; যাহাতে দীর্ঘস্যায়

তাহা বিলম্বিত; এবং বাহাতে এই স্থায়িত্ব দীর্মণ্ড মহে অল্লভ নহে,

তাহা মধ্য লয়। পা গানের হার গাত্রাকে অভিক্রম করিয় বিস্তায়িত

করিলে অথবা বাদ্যের নিসন্থানী হইলে লয় ভয় হয়। গানের হারে

এবং বাদ্যের ধ্বনিতে ওতপ্রোতভাবে নিলনে নর্বমাই লয় লফা

হয়। বিশেষতঃ প্রত্যাক শ্রমণ ইহা গুল্লভাবে ফুটিয়া উঠে এবং

এইরূপ গতিতে মোক শ্রমণ অর্থাৎ শেষ শ্রমণ মানই হ্ররের পূর্ণ

নির্নিত্ত।

স্থার কাল পরিমাণ ঠিক রাখিতে এবং ছন্দ স্থাপট করিতে তালের উৎপত্তি। তাগুব এবং লাফ এই চুই শক্তের আদ্য অকর

^{† ँ}ठोनः कार क्रियामानः सदः भागावधीक्षत्रारः। विगविष्यः क्ष्यः स्थाः उद्यापाः चनः क्रमारः ॥°—भागद्राकायः :



 [&]quot;ফ্রন্তের বধ্যা বিশবদ্ধ ক্রতঃ শীয়ন্তরেমনতঃ ।
 বিশুবেশ হিতাবৌ ক্রেন্তে তথ্যারায় বিশ্বমিতেই ॥"—সঙ্গীত দর্শব"।

গ্রহণে "তাল" শব্দ গঠিত হইয়াছে। # এইরূপ তালের উ**ৎপতিমূলে** দুত্যের সহিত সংশ্রবই অনুসূচিত করে। যাহাই হউক কাল এবং তুন্দ ভাল ছারা নির্মিত হয়। গানে হারের তুন্দ ভঙ্গ বা সময় ভঙ্গ इंहेर्स्ट जाल-छ्क अवर लब्र-छक्र इंहेरव । धरेखण गांत धवर वीरसा সর্ববদা সম্পৃতি আবশ্যক। ইহা সাধারণতঃ "দস্ত" নামে ক্থিত হয়। "সম" মর্থাৎ বাঁদোর প্রারম্ভ ও গীতবাদ্যের বিশ্রাস স্থল। তান চতুর্ভাগে বিভক্ত ;---সম, বিধম, অতীত, অনাগত বা অনাঘাত। মতভেদে তাল ত্রিবিধ: – দল, অতীত ও অনাগত , ইহার মধ্যে 'সম' সম্বন্ধে শুদ্ধ জ্ঞান হইলেই যথেক ! প প্রত্যেক তালে হাতের ভালি বা অম্বুলির টকঃ ঘারা তালের ভাগ সূচিত হয় এবং ভালি বা টকরশুভ ভাগও প্রদর্শিত হয়। যথা, চৌতাল ধার মাজার তাল। ইহাতে চারিটি তাল এবং তুইটি ফাঁক অর্ণাৎ ইহার চারিভাগে হাতের তালি বা অসুলির টকর দেওয়া হয় এক ছুইভাগে দেওয়া হয় না, এইরপ কাওয়ালী গায়ি ভাগে বিভক্ত ৷ ইহার তিন ভাগে তালি বা টকর থাকে এবং একভাগা পুরু। যাহা হউক ইহা সাধারণ হিসাব, ইহা প্রায় বকলেই অবগত আছেন।

স্থারের মাত্রা এবং ছন্দ, তালের মাত্রা এবং ছন্দের নিরামক;
ফার্থাৎ স্থারের মাত্রা এবং ছন্দকে লক্ষ্য করিয়া তালের মাত্রা এবং ছন্দকে
ক্ষম প্রথিত হইয়াছে: এইরূপ একটি তালের মাত্রা এবং ছন্দকে
সমস্তাবে বিভক্ত করিয়া তালি এবং কাঁকে প্রদর্শিত হয়, তাহাতে

 [&]quot;তাওবভাষাবর্ণের সকারো-লাভ শবারাক্।

াল সকতে লাকে তদা তালা প্রকীর্ত্তির ।"—সসীতার্ব।

[্]ৰিন্ত জন্ত, কালেতু যদা তালত সহতিং। ভল সম ইটি প্ৰোক্তঃ সমকাল সমুন্তবাৎ॥

ক্রমন্ত বং তালি এবং কাকের মাত্রা সমান থাকে, ক্রমণ্ড বা অসমান থাকে। এই হিসাবে তাল সুই প্রকার, যথা;—সমপদী এবং বিষমপদী। তালের অংশগুলি সম্যাত্রিক হইলে তাহা সমপদী এবং বিষম্মাত্রিক হইলে তাহা বিষমপদী। সম্মাত্রিক তাল অবার সুই প্রকার হথা,—চতুর্মাত্রা ও ত্রিমান্তা। একলে প্রচলিত তাল সমূহের ঠেকা, পদ. মাত্র, প্রভৃতি সংক্ষেণে প্রদর্শিত হইল।

চৌতাল — (সমপদী জিমাত্রিক।)

ঠোতাল বার মাত্রার তাল। তথাধ্যে চারিটী সাঘাত হ ছুইটী শূরু থাকে। ঠেকা হথা :—

ধা ধাদিন তা কভাগে দিন্তা তেনে কতা গেলা খেনে।

ধামার।

ধানার চৌদ খাত্রার তাল ভন্মধ্যে তিনটা আঘাত ৬ চুইটা শৃষ্ট । ধাকে। ঠেকা বথাঃ—

कर्स के स्थ के विकास मिल्ल मिल

আড়া চৌতাল।

আড়া চৌতাল চৌদ্দমাত্র ব তাল। কমধ্যে চারিটী আঘাত এবং তিনটি শৃষ্য। ঠেকা যথা:— *







ধা গে ধা গে দিন্ তা কং তথে। দিন্ তা ভিটে কতা গাল খেলে।

তেওরা।

তেওরা সাত যাত্রার তাব, ইহাতে তিনটী আঘাত। ঠেকা বথাঃ---

ধা বেনে নাগ গ দি বেনে নাগ্। ক্ৰপক।

রূপক সাত সাতার তাম। কলাবিৎগণ ইহার সমের উপর আঘাত না দিয়া তথায় ফাঁক দিয়া দন্ নির্বাহ করেন, তজ্জ্জ্ঞ সমের জায়গায় ফাঁক দিয়া শিখিত হইল, গানেতেও ঐ প্রকার শেখা আছে। ওই ফাঁককেই সম্ বুবিতে হইবে। ঠেকা বধাঃ—

তাগ দিং তা ভাগ তেটে গদি ঘেনে।

"বাঁপিতাল—(বিষয়পদী।)

র্মীপতার দশ মাত্রার তাল, ডক্মধো তিনটী মাঘাত এবং একটা শৃষ্য। ঠেকা যথাঃ—-

या दंश की दंश किस् की देंके थी दंश किस्।



সুর ফাঁকতাল।

স্থা দাক্ দশ মাত্রার তাল, তন্মশ্যে তিনটা আঘাত এবং দুইটা শুক্ত। ঠেকা বথাঃ—

धा त्यस्य मांश मि त्यस्य मांश शे मि त्यस्य मांश।

চিমাতেভালা—(সমপ্ৰদা চতুৰ্যাতিক ।)

ডিমাতেভালা বোল মাত্রার তাল, ভঝ্মের ভিন্টী আঘাত এবং একটা পৃত্য । ঠেকা যথা :--

য়া গৈ দিন্তা তেটে দিং তা ধা দিন্তা
কতা তেটে কতা গদি বেনে।

'পটতাল।

পটতাল আট মাত্রার তাল, তন্মধ্যে একটা অঘাত ও একটা শুস্ত। ঠেকা মধ্যাঃ—

। ধাৰোধাৰোদিন্তাকতা।

পঞ্চম সওয়ারী।

পঞ্চ সন্তরারী জিশমাজার তাল, ইহাতে পাঁচটী আঘাত ও তিনটী শূন্য। ঠেকা যথা:—





ভাগ দিং তাগ দিং ধা কেটে তাগ খুনা কেটে তাগ তেরে
কৈটে তাগ দিং তা কেটে দিন্ তা তাগ তেটে তেটে তাগ
নৈ ধা কৈটে তাগ।

বৃহ্মতাল।

ব্রন্ধতাল আটাশ মাত্রার তাল ইহাতে দশটী আঘাত এবং চারিটী শৃন্ত । ঠেকা যথাঃ—

ধাদিৎ পুরা বানে তেটে ভাগ পুরা ধা কেটে ভা ধা
কেটে ভা পুরা ধানে দিন্তা কেটে ভাগ্ভাগ্ভেটে দিন্।

'একতালা

একতালা বার মাত্রার তাল চারি মাত্রা করিয়া তিনটী সমান পদে বিভক্ত। ইহার বাঁকি নাই, তজ্জনাই ইহার নাম এক্তালা, কিন্তু তিন মাত্রা, করিয়া চারিটাপাদে বিভক্ত করিলে লয় আরও সহজ্জ দয়, তজ্জ্যত তিনটা আখাত এবং একটা শূন্য দিয়া লখা হইল। ঠেকা যথা:—

ধিন্ধিন্ না না ধিন্না ক তে ধা তেতে কেটে ধিন্না।

P ...

ে ধেম্টা।

খেমটা বার মাত্রার তাল ইহাতে তিনটা আঘাত ও একটা শৃষ্ট । ঠেকা যথা :—

धा देवरे में थि मा देवरे थिया थिया।

काम्प्रीकी दथभूष्टे।

पित्र मा था कि मा

ं माम्রा ।

দাদ্রা ছয় মাত্রার তাল ইহাতে একটি আঘাত ও একটি। শৃত্য ।
ঠক: ফ্থা :--

शिविमा ना विमा।

্জাড় খেম্টা।

আড় থেম্টা বার মাত্রার ভাল ইহাতে তিনটা আঘাত এবং একটা দূল। ঠেকা যথা :—

रिकटि किन् को को पिन् भी उक्टि विन् को को विन् को।

ৈ চিমাতেতালা।

চিয়াতেতালা বোলুচী দীর্য মাজার তাল ইহাতে তিন্টা আখাত এবং একটি শ্রা। ঠেকা বধা ঃ---

**

भी विन् शिन् भी विश्व छोरन एंडरतरकरहे थि ना छिन् छिन् छो कर भोरन एंडरतरकरहे थि।

' কাওয়ালী।

কাওয়ালী সাটটা দীর্ঘ কিন্তা গোলটা হ্রত মাত্রার ভাল, ইহাতে তিনটা আঘাত এবং একটা শূন্ত। ঠেকা বথা :—

र्थ पिया ना विविना ना छि छिना ना विविना। ठू९ ति।

ঠুংরি আট শাজার তাল, ইহাতে একটা সাঘাত ও একটা সূতা। ঠেকা যথা :—

था था दकरहे जाभ मा थि था टकटबरकरहे।

'ছেপ্কা

ছেপ্কা আট মাত্রার তাল। ঠেকা বধা :—

†

।

বিক্ মাতে কেটে তাগ্ তিক্ নাতে কেটে তাগ্।

付 ু 'কাহার্বা।

->-

মধ্যমান ।

मधामान (संस्कृति मीर्च नाळात ताल । (उंका यथा :--সহত করিবার জন্ম বত্রিশটি: ক্রম মাত্রায় নিথিত হইক। मी विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व की विश्व की कि

আড়াঠেকা।

আড়াঠেকা আটটা দীর্ঘ কিন্তা বোলটা হস্ত মাতোর তাল। टिका यथा :--

> क्रिकें कि संस्थित कि कि ' ভেওট্ ।

তেওট চৌদ মাত্রার তাল। ঠেকা বথা:---िया थे। विविध दिया दिया कि के कि विधि कि कि """"

ধং টোন মাজান স্থাক । ঠাকা সংগ্ৰ । শ্বিদ্ধান সংখ্যাত্তক লাবিল্প সংগ্ৰিক্

তামুৱা-মিলন।

যান্তের সাহাত্য ব্যতীত বার সাধিমা হইতে পারে না, তৎপক্ষে তাপুরা অতি প্রয়েজনীয়। হাগ্যোনিয়মের সাহাদ্যে স্কর্মাধন कतित्त, जेकाञ्च हिन्तु-मकीतात्त्व डैभारवारी कर्फवत स्टेस्ट भारत मा ক্ষেত্ৰ, হাজোনিয়ৰ ঞৰি বিহাঁৰ যন্ত্ৰ, যিও যুক্ত দলীত ৰাজাইবাৰ উপায় নাই। বিশেষতঃ হিন্দু সঙ্গীতে অধিকাংশই মিড় ব্যবস্থ রুইয়া থাকে। আধুনিক কতকগুলি গায়কদের মধ্যে হার্ফোনির্মের আদর মধিক দেখিতে পাওয় যায়, কেননা গাঁহারা গীত গাইবছে সময় অন্ত ব্যক্তি বার হার্মেমিরম দক্ষত (ক্রম) করাইয়া গীয়ত্র সাহাল লইয়া থাকেন। এই প্রথাটি যেন গোলে হরিবোল দেওয়ার ন্যায়, ইহা প্রেতি মন্তর না হইয়া বরং বিপরীত ইইয়া থাকে। আনক সময় দেখা যায় যে হাৰ্মে নিয়মের অথবাক কর্মাণ I ভারতে কড়জ আশ্রয় করিয়া গীত গাওয়া হয় এবং তৎসঙ্গে সমত (ক্রুণ) করণভ হয়। হাজোনিয়ামের বর অতি জমকাল থলিয়া কেইট ভত লভা করেন না; নচেৎ ইহাতে অগতির দোল ঘটে। কারণ যভত হটতে ধাথদের অন্তর চারিটা ক্রান্তি, আরে ধ্বাব হইতে গান্ধারের অন্তর তিনটী প্রতি, স্নতরাং ধহাকে বড়জ আন্তার করিলে, গাছার ঠিক ঋথন হইবে না; ধৈবতেং- ঐ প্রকার । সভার, এস্রাভ প্রভৃতি বজে স্বর-সাধন, করা বাইতে পারে, কেননা ঐ সমন্ত বছের পরত। ইচ্ছামত সরাইতে পারা যায়। আধুনিক কেহ কেহ ভালুরাজে উপেক্ষা করিয়া, হাত্মোমিয়মকে প্রমিক্ত সর লাভ করিবার উপফুক্ত আদর্শ বলিয়া বিভাগ বর্গে কিন্তু তাহা নিভাগু আয়োভিকু। कादश, जातुन विश्वाः, केक्ट्र-पञ्च छ ना ४८ भर्तकः । शहर १०४०

দারা উহার কর্কশতা পরিবর্তন করিয়া মধুরতা লাভ হয় না 🗓 কর, কোন ব্যক্তির স্বর অভি যিউ এবং গিট্কারি ফুক্ত, আর কোন ব্যক্তির স্বর মোটার উপর কর্কশ এক থিট্কারি বিহীন। যদি এ গিট্কারি বিহীন ব্যক্তি এ গিট্কারিযুক্ত ব্যক্তির সহিত স্বর সাধনা করে, ভাহা ইইলেই কি তাহার সর প্রমিষ্ট গিট্কারিযুক্ত হটাবে ? কোকিলের হারের অনুকরণ কাকের পাকে যেমন অসম্ভব, কর্মশন্তরও মিন্ট হওয়া সম্বন্ধে তত্রপ। তবে পরিনার্জনাতে ছপেকাকত ভাল হইতে পারে। বিশেষতঃ সমুধ্য-কণ্ঠের সর কর্কণ হইলেও, স্তার নদাইতে পারিলেই গীত গাহিতার উপযুক্ত হয় ৷ খর-দাখন পক্ষে তামুরাই বিশেষ উপযোগী 🖟 তামুরায় চারিটী তার থাকে, কণ্ঠন্থরের ওজনবিশেষে 🗷 নথ্যের চুইটা তারকে মুদারা গ্রামের যভত করিয়া বাঁগিতে হয় ও বার্যদিকের তারটা ঐ ভুডির উদায়ার পঞ্চম এবং দক্ষিণের ভারটা ঐ জুড়িব উদারার বড়ভ করিতে হয়। উদারার মড়ভ বাঁধিকার নীতি এই বে, এ ভারটীতে গান্ধারের ধ্বনি উৎপন্ন হট্রা বড়াতে কাসিরা বানি হয়। এ রূপে অগ্রে ভাষানী বাহিনা, জড়ির ষরের সহিত কণ্ঠমর ঐক্য করিবে, এবং ভাষাকে মূদারা আমের ধড়ভ তির করিলা, ক্রমান্তে এক এক কর চড়াইরা, অপর ছয়টা কর নির্গত করিবে ৷ এইরূপে মুনারা, উদারা এবং তারাসপ্তক অনুলোম বিলোমজনে পুনঃ পুনঃ যে পর্যান্ত হর দকল শুদ্ধ ও স্পান্টরূপে কটে প্রকাশ না পায়, ভাষৎ শাধনা করা কর্তব্য: তাত্তরাকে স্বর-সাধনার আদর্শ করিখে,

শুরুন অর্থাৎ তানপুরার ভৃতি হটী একগভাবে গান উচিত যে উদারার সধাম ও
তারার পঞ্চন পর্যান্ত অক্রেলে কর্ত হইতে নিগত হয় । জিনপুরু পূর্ণ নিঃসারিত করিতে
পারিবে উত্তন হয় । প্রকৃত গুলাবানার না থাকিবে কর্ত হইতে জিনপুরু বাহির । তার্ন।



প্রত্যেক ব্যক্তির কণ্ঠস্বরের ওজনমত হার বাঁধিয়া বাইতে পারা
যায়; কিন্ত হার্মোনিয়মকে আদর্শ করিলে যে সকল দোষ
ঘটে, তাহা পূর্বে উক্ত হইয়াছে। ইচঃা কয়িলে স্বরক্ত ব্যক্তিগণ
হার্মোনিয়মের ঋখব, অথবা ধৈবতকে বড়জ করিয়া যথাক্রমে
আরোহণ করিলেই উক্ত দোব উপলব্ধি কয়িতে পারিবেন।
সভরাং হার্মোনিয়মরে শ্বর-সাধন বিবরে সর্ব্যশ্রেষ্ঠ স্থান না দিয়া,
তাসুরা এবং গুরুপদেশকেই আদর্শ স্থানীয় করা সর্ব্যতোভাবে করিবা।



হিন্দী উচ্চারণ।

हिन्दी जानकृति প्रकृतात मध्य हिन्दुकानी ध्वरण केलावण ना ভবিলে প্রস্তিমধনতা নম্ট হয়। গাহিধার সময়েও উজারণ্ডীনতায় ক্রিকটুতা উৎপাদিত হয়। বিশুদ্ধ সঙ্গীত শিক্ষা করিতে হইলে দলা গান ভিন্ন উপায় নাই, অভাগ্ন গাঁহালা হিন্দুখানা সজীত শিক্ষা করিবেন, তাঁহাদের হিন্দী ছায়া শিক্ষা করা প্রয়োজন। তিলা ভাষা যেরূপ বণীবভাহেদ লিখিত হয়, এই প্রকে সেইরূপ ্তিলাসে লিখিত হইয়াছে, যাঁহারা হিন্দী ভাষা জানেন ন, ভারাদের উভারণ বিশুদ্ধ স্ইবৈ না, ৩০জন্ত হিন্দ্রোনা <u>জন্মে-প্রণালী সম্বন্ধে তুটি এক কথা বলা আবিখ্যক বেধি করি।</u> প্রভাৱ বএর উচ্চারণ "ওল্প' ভঙ্গর ব্যঙ্গালাতে অন্তঃস্থ বএর ্ এইত্রপ সম্ভেক্ত করা পিছাছে। ব্যা-ধ্যাধত (প্যাওজত) পাৰে (গাঁওয়ে), খাল বা গৰাপ (গওয়াল), অন্তঃফ 'য়'এয় ইচনরণ ''ইর'' : ন্থা---রহ / ইত হ বা ইমেহ । : ''ঐ' এর উচ্চারণ িলালা ভাষাতে 'ভই' হয়, কিন্তু হিন্দীতে ''ল্যায়'' হইবে মধা— अंग (काश्चिम), रेडॉन (लाग्नमि), रेकिम (काश्चिम), जि ন্যায়), হৈ (হালে), "ও" এর উভোরণ বাঙ্গলা ভাগাতে '৬উ' হত, বিজ হিন্দীতে "জঙ" হইবে ব্যা—ভার (অভরু), গানের িলালে-দৌক নাথি কথন কথন অন্তঃ স্বারের লোপাও হইয়া পাকে :

হথা—ত্রু—তন, শশী—শশ, এইরাপে য ফলারও বোগে দুই হয়; যথা—ধ্য —ধন, মধ্য — মধ্য । লাএর ছানে কথন কথন গি' যুবছত হয়, যথা—কমল — কমন, গলো—গরে, ইত্যাদি।

F =

স্রবোধ সম্বন্ধে কয়েকটি সঞ্চেত নিয়ে প্রদর্শিত হইল।

新 食器 9	(.		图586[1]	Bent 1				Şeri o	65		
1			अक्ष छ	একসাত্র	· 7	3 -! - !	÷į	<u>4</u>	新多	57, St	
L			কিন্তু	ছিম্ভা		- 4	<u>:</u>	1. 741	<u>5</u> [
L's			[398 ···	[3]	4	1.		(변 왕)	- 19 · 1		
-2		146	অন্ধ্যান্ত্য · · ·	অফ্ল-ত্র		23	*. **[* ***	<u>""</u> ;		
ě			ेयद्ध ⋯	দিকিল্	<u> </u>	4.1	×	क	र्दे		
e i			<u>চল্লে (ইডেন্ডে</u>	বারখান	ি সংস্থা	.73	4	चें	¥.		
í-			द्विह्यान	্বশ্বাহার)·	भी	- <u></u> -	南		
<u> -</u>		/#1	গ্ৰহাকা	কড়ি		17	- T				
	٠,.	1.	শিষ্ট্রেখা -	হা[×.		13	Si.	4	গু	卓	
_			নিম বিস্তৃত্	- F		2.3	5	<u>্ব</u>	5		
;i			উদ্ভ-বর্জনী <u>-</u>	-द्वेशे रा	373* ⁹	शिका हु	ricar State	i 42			

रथा ;=-चं श

ज्ञानगर-प्रकृति ।

祖師が 利用機能 185 GT

উদাধ্যম :

বিন্দু -- উদ্ধে তারা সপ্তকস্থানীয় ্র স্থা ানজে উদরা সপ্তকস্থানীয় সৌ 🕏

ক্ষাভাল-পূজ ল প্রচারে জনসারাজ্যারে প্রথম ব

ুশ্র এক প্রবেশ দৃশ্রিদ উজ্ঞানিত প্রবেশ সংগ্রাস

মংজ্ঞানপ ---

ক্ষেত্ৰ-প্ৰেলেগৰ্ভন্তাধক ।

তাল সময়েন

· · (राष्ट्रिक · । सद्यान्त्र सें। स्व

48 ... ma

१.२.वेडमहिल वक्ष ल ल वहार न कर ८७१

টুদার: মুলতে

সাকাৰাম। সাহানি, সালাল: মাসালানি

मी के बीत भेर दीर केर

- 00

স্থর-সাধন।

আর্রা্হণ। অন্তেহেণ।

ুমারে জামালাছগনি দা, সানি ডালামানার সান নিজে যে কেন প্রণালীতে সর্পণ হেখা গারুকু না কেন, ্তাহ। উপরোক্ত কিথার মত উচ্চারিত হুইরে।

्रकः—-वाद्वास्य ।

অনুবেক্ত

मं के के में में में में ইন্-জারেট্রণ। 4.有其情事有

में अ ते भ ने भ निमें में भि भ भ ते ता ता ज

এন: — আর্রাছ্র <u>)</u>

অব্যাহ- ।

में का ना म में मिला में ना का म

Sম:---আরোহাণ।

केस केल गम लाल

শ্ৰান্ত(হ্পা

संच लेख गंग तेल



多於一一等的特別會

त्रे मा न म के कि कि कि ने न न न में भ म म

भजना चंचचच ने निनिनि संभैभै भै

भृत्युद्वाकात् ।

भे भे भे भे भे भी भी भी भी सब व व व व व व व व व

ने श त त से क क का भ भ भ भ

र्भ भ को का जा जी हा ना भे माभ ने न न से सास

ছিনিনি সংস্থ

কাৰ্ডাত্ৰ ।

ति में भे भी भी भी के सम के कर का बंब का हा

報報報 并打开

the second secon



९८: बाह्यारे !

इंज इंका साले से की है। की जी

भा इस्टाइर ।

ভাবেরেছেল ন

\$ 5.00 m - 1 3.70 5.1 5.1 1

म को को में का को भेज ने में ल वे भे के की की की की की की यदाहाश्वर ।

ले कि ये ले कि ले के घेटी के से ले के की की से ले की ल

ऽव्हा---वाद्याद्वाद्वः । व्यव्हान्द्वः ।

मं मं भं ने सं में में में ने ना ने ने





SSRI-BIRRER I

मं के ने मंत्रे के ने मंत्रे में ने मले में मिन 面一代引发生!

में से ये लेग कि से से में के अ को में के से माने के में ३२,२°०० अग्रहाइ२ (जार तुस्ताहार _।

मंत्री की की की की की में का कि की की की की की की ১৩নং—আরোহণ। অবরোহণ।

म स ने में थे वे का ने में ले हैं के में के में कि में ফাইটুরুছিন।

में नियं अभन नियं अभने से पे अभने की म ১৬য় -- আরোহণ।

र्श के कि ते में भे च कि के में भी ১৫না - জাতুরার্ডণ

मं के से मं के मं के से मं के मं मं मं ने के ले के ने के ले के के ले के ले के ले के ले के ले के





অবস্থাহণ ৷

১৬নং---আরোহণ (

र्घिति भै निर्धिति भै, मैं निर्धित सं निर्धित स् निर्धित भे भे ते ते भे ते भे भे भे भे भे भे भे ने भे भे ते ते ते भे ते ते भे भे ते भे ते भे ने

১१मः—चारताङ्ः।

भ का न मं का न में का न में न में

4

अवसम्बन्धः

लं हो कि लं हो कि में, में कि से में कि से श्रं कि से लं कि से से से से से लं में लं हो में हो से से से से से लं हो है। अस्त-अहमारूर।

भे सा स वे ले से भ स स अ श श में भी भे में यो अं ले में से सी मी मी से सी मी मी मी भी, स्टाहाइन।

২ ০ম: --- আরেজিপ ।

অব্রোহ্ণ।

२०मः---वाद्धाः हन ।

অব্যাহ্য ।

भं की तो भं शे ही भें, भं की से शे भं शे भी शे २६म'-- वार्त्वाङ्श। ध्वरत्वाङ्शः

मं च न मं मं नि च न मं ने च न म

২ জন্—জারেরাহণ ।

'ক্রেড্রাহ্ণ ।

प्रकार में अभिने भी निष्ठ में ने के भी

২৪ন'— আরোহণ। অন্দ্রোহণ।

म के के के के के भे भे भे भे में से ले के के के के অংরোহণ : २९२१ - कार्त्राहर

अं सं ते भें में में भें भें, अं ले में के भैं ते से अ ২৬ন্--- আরে হণ 1

如 報 司 省 南 首 一 新 南 報 南 前 南 首 南 新 অধ্যৱস্থিত :

में की सं रूप में तो के में में कि से रूप में की ঠ। হুইতে কেন্দ্রে জনত ;

२१वर---वारताहर । वारतगहर ।

म का श श श श मि मं में नि ध ल श का का अ

ঠা হইতে জন্ম দত। ২৮নং—আ'রেইছণ।

मका कान नम मन नम बन निर्म অ — আ- আ- আ- আ-

3---

<u>_</u>---

.8---

অব্রেইছণ।

সাঁদি নিষ খাস সাম সাল জা— আ— জ;-- জা-- জা-- জা--

Ē---

২৯নং---**অ্রে**রাহণ।

भंतिय संग्रं न नंबे অ্থেট্টোহণ |

में पंज नियम प्रति वार्श में ১০ন্--- তা'ররাহণ <u>।</u>

अभिने कंत्र के के बिन भेनि भै

অব্যৱস্থে |

में क्षेत्र के संस्थित से के की की में

ত নেং---আরোইণ ।

অনুভারে ব

मंश्री के किया, भेमें निर्मा पंकाम

- ৩১লং

मिनिष्ण श्राम्भिम भाचात्रामा मा

ेट्डार (मण्यूर्ग) की पी ाने, कारणांनी, बाजागी।

中 对 有 本 都 都 都 都 都 智 智 知 知 佛 智 新 知

অন্তরঃ

> ভৈরব, কাওয়ালী। শ্বী দানী (২) আস্থায়ী।

में की की न न न न में पी न न न न की की मी

অনুরুগ ।

্ৈভরবী, (সম্পূর্ণ) দ্বী সাধী নি, (৩) কাওয়ালী, আন্দায়ী

তাস্থার) |

তি জি (সম্পূর্ণ) के ते ये कि कि के, का बहाती, আস্থায়।

অনুৱা ৷

南南省南省 南南省 新南省 新南南南省

南方衛南方衛衛衛衛

斯哥力爾斯

বিভাষ খাড়ব, ম বিবাদি, কাওললী, আজালী।

并同时被有相有有 · 崔邦电为新为为

অন্তর ।

के के के में में की में कि में के से के के

আলাহিয়া,(সম্পূর্ণ)

का दशकी, काकाती।

২য় জাকুরা ৷

ने राभ से निमंत्र सम में में में से ने में से ने में

মধুমাধ্ সরজ, দি দি ওড়েব।
গ ধ বিবাদি।—কাঙ্যালি, সাভাই।

অভুকা ।

इन्माविंग मात्रक, मण्यूर्ग ।

কাঁপতাল, আহারী।

ভাল্ডাস্থ

和 对 局 对 局 知 局 知 局 知 有 知 有 知 有 。 和 有 知 知 知 有 日 報 知 局 知 局 知 有 。

> গৌড সারজ, সম্পূর্ণ, দি ম কাওললী, আন্তাই

*** **

> > ভালক

> ভিমপল শ্রী, সম্পূর্ণ, গ্রাম (১৯) কাজ্যালী, অস্থায়া ৷

ना निर्मा की में की की की की में की में को निर्मा की में की में की मों की में क्रकटा

> মূলতান, সম্পূর্ণ, ই সি হী ম ম (১১) কাজনালী আছারী।

湖南南省南南南省 南省 南省 南省

অ্ভুর

পুরবী, সম্পূর্ণ, भी ম ম । (১২ তাওলেলা, আহারা।

গ্ৰন্থর |

পুরিয়া, খাড়ব, ৰ মি, স বিবাদি, কাওয়ালা, আস্বারী।

में भि में भी ते भी ते

में निक्ति मंत्रे में ते मे में ते म

24.6

3.80 I

> জী, সম্পূর্ণ की দী ম ক'ভয়ালী, আজারী।

ক্তরা 1

南京中南南河鄉 新南京報報司南部中南 中部銀河和 日南京南部州 中南 報 中南 首 安 南 河 南 報 中 কল্যাণ, সংস্থা ম । ১৯) ব্যালনার আন্তর্গো ।

ক্তুরা

> ্ ইমন সম্পূণ, ম কাওয়ালী, অভায়ী।

ने रे से मि से में निका ने से ने में में में

**

ভাল্প

ইয়ন, কল্পাণ, স্মপুল্ ইয়ন (১৮) শিপারাল, লাভালা।

草刻 献 安京 新 南 朝

B(F)(1)

南部外部河南部州河 南部南部省

্তুপালা, ওড়ব, ম নি ফাদি কাভ্যালা, আছাই।

म सासा ने जिसे की हैं है सा भी से भी भी

-

तं तं तं सं में में में में सं में स के से में में भे को में के ते को में में स में में से में ते से के में में में ते को में में स में में से में में से में

> কেদার, সম্পূর্ণ, ^{ঠিম} লাজনলী, আছারা।



51-99

হা**সির সম্পূর্ণ, ম ম** (২১) কাওগালী, আজালী।

অভুরে)।

ले में ले वि से में सी मी सी मी की मी मी जो जो



भे अं अं नि नि मं में भे भे भे नि में में में

ছায়ালট, সম্পূৰ্ণ, দি নি কাওয়ালা, আভাৱী !

मिक मिक तक के ति अ से ते के ते के ते के ति अ के ति के त

图形设计

*

ক্ৰেড়া, সম্পূৰ, গ ই দি দি

में ले ले से सिंह के में में में के

THE PARTY I

में कि कि । भिन्न भिन्न अभिन्न भिन्न भिन्न

তিলক্ কামোদ, সম্পূণ, ^{শি নি} কংলোলা, গাভাগ ।

किंग कर्म मंत्र में के संस्था के किंग के से के से किंग के से के से के से के से किंग के से के से

1587

के व क कि के में से से में कि में कि में

> कुराहे, राष्ट्रध्य, मि नि द! अहाती, ज.स्वर्ता ।

1979/197

मंत्री भे भी भी भी भी की की की की की की की

> আড়ানা, সম্পূর্ণ, গ ই নি নি কাওয়ালী, আন্তারী।

অন্তর ।

मिक्नू, मन्त्रुर्ग, वी कि । (२९) क्राली, बाजाती ।

सं में में सं सं सं में में में में में में में में में

> ্বসন্ত খড়িব, স্বাজ্ঞিত শীংশা কাজনালী, সাজালী।

में के ' का की ' मंत ' में के घ में के कि में के कि

र्म ते ' में में में में में में में में में

कारहता

में से में से से कि कि के कि में में कि में

মাল কৌশ, ওড়ব, আ স গ্ৰুত, গ মি নি কণ্ডয়ালী, আন্থায়ী।

সিন্দুড়া, সম্পূর্ণ, গিনী (৩১) কাওয়ালী,ব্যাস্থারী।

र्म न अ को भे अ की भी भी की भी की को भी घो की भे ती को की को अ अ भी की ती को भी

হিতোল. ওড়ব, ক স ক্ৰিড মি (১৯) কাপ্যাবী, আস্থায়ী।

ते न ज न ने में भी हो। नि हो। में न भी न न न भी निहा में कि में न भी है में निहा

र्श से मं के में के में





*

अस्प्रदाः ।

পাঁরজ, স্মপূর্ণ, ম के वे
কাওয়ালী, আহার্য়ী।

智力的程程后知: 制为"声量"对发音 为"有为有量" 为"向中部有为中部 为"和程" 后"中"制度"智能"的"中"。

অন্তরা !

निमि के निभी भी निमित्र के निमित्र भी

5.0

বৈহাগ, কাওয়ালী। (৩৪) আছান্ন।

ने भ ने ते भे ने ते ने भे ने ने

लं के ले में में में में ने में ने में ने में ने में ने में में ने से में न ले ले की में ले में ने ने ने ने ने

श्रेष्ठ सं के से म

be 5

(মধাগতি) ভৈরব, চোতাল, সম্পূর্ণ, (भी भी न ন)

আহায়ী।

सी भंता ले भंती की भं

অন্তর্ভা

र्भ रे न में के कि में के के के कि कि कि के के

·*-

5 %

本前爾本希蘭州新衛邦西湖福報新

भी की की की में में में की की भी

कें में ने म ने भी में

সক্ষাই |

मंधिष्ठ ने भीधिष्ठ में मान मान भी की मे

নালভেক্স প্রকারের না হান ছি নবছরই ।
আনগ্রে নতানভার বৃদ্ধানি ।

b N

भं भे भ स भ से से से से से में में से म म म म

सं में अं में अं अं अं अं अं में में अं भी भी अं इ. में २ ३ २ १ १ १ १ मा मा स्वा

र्षे म त्र अ म ज ते। भी ते में स त त में भ

भे ते भे की जे जे

ৰাভোগ।

衛女女女女女女女女女 中方 本有 本本有 本有本有 報 并 म कि क्या लंड म श कि से ब मं में में स में में में में में में में में 間 1 मंत्री की में न में में ণ জান হয় 15 -30

(২) (বিশদ্বিড) ভৈরব, চৌতাল। আস্থারী।

मंबी के में में के में में की में

অন্তরা

मकादी।

জাতোগ।

(0)

(মধ্যগতি) ভৈরব, ধামার।

আহারী।

दर एका

(P) (O) (O)